ओ३म्

संस्कृतवाक्यप्रबोधः

श्रीमत्स्वामि दयानन्दसरस्वती निर्मितः

अजमेरनगरे

वैदिक यन्त्रालये

यज्ञदत्तशर्मशास्त्रिणः प्रबन्धेन मुद्रितः

पठनपाठनव्यवस्थायां द्वितीयं पुस्तकम् ॥

इस पुस्तक के छापने का अधिकार किसी को नहीं है

क्योंकि

इस की रजिस्टरी कराई गई है

संवत् १९४८

कार्तिक शुक्ल

चतुर्थवार छपा

२०००

मूल्य ।)

डाकव्ययसहित

SGDF

SGDF
Sri Gargeshwari Digital Foundation

ओ३म्

परमगुरवे परमात्मने नमः ॥

अथ संस्कृतवाक्यप्रबोधः ॥

भोः शिष्य उत्तिष्ठ प्रातःकालो जातः ।	हे शिष्य उठ सुबेरा हुआ ।
उत्तिष्ठामि ।	उठता हूं ।
अन्ये सर्वे विद्यार्थिन उत्थिता न वा ?	और सब विद्यार्थी उठे वा नहीं?
अधुना तु नोत्थिताः खलु ।	अभी तो नहीं उठे हैं ।
तानपि सर्वानुत्थापय ।	उन सब को भी उठा दे ।
सर्व उत्थापिताः ।	सब उठा दिये ।
सम्प्रत्यस्माभिः किं कर्त्तव्यम्?	इस समय हमको क्या करना चाहिये?
आवश्यकं शौचादिकं कृत्वा सन्ध्यावन्दनम् ।	आवश्यकशरीरशुद्धि करके संध्योपासन।
आवश्यकं कृत्वा सन्ध्योपासिताऽतःपरमस्माभिः किं करणीयम् ?	आवश्यक कर्म्म करके सन्ध्योपासन कर लिया इस के आगे हम को क्या करना चाहिये ?
अग्निहोत्रं विधाय पठत ।	अग्निहोत्र करके पढ़ो ।
पूर्वं किं पठनीयम् ?	पहिले क्या पढ़ना चाहिये ?

SGDF

वर्णोच्चारणशिक्षामधीध्वम् ।	वर्णोच्चारणशिक्षा को पढ़ो ।
पश्चात्किमध्येतव्यम् ?	पीछे क्या पढ़ना चाहिये ?
किञ्चित्संस्कृतोक्तिबोधः क्रियताम् ।	कुछ संस्कृत बोलने का ज्ञान किया जाय ।
पुनः किमभ्यसनीयम् ?	फिर किसका अभ्यास करना चाहिये?
यथायोग्यव्यवहारानुष्ठानाय प्रयतध्वम् ।	यथोचित व्यवहार करने के लिये प्रयत्न करो ।
कुतोऽनुचितव्यवहारकर्त्तुर्विद्यैव न जायते ।	क्योंकि उलटे व्यवहार करने हारे को विद्या ही नहीं होती ।
को विद्वान् भवितुमर्हति ?	कौन मनुष्य विद्वान् होने के योग्य होता है ?
यः सदाचारी प्राज्ञः पुरुषार्थी भवेत् ।	जो सत्याचरणशील बुद्धिमान् पुरुषार्थी हो ।
कीदृशादाचार्यादधीत्य पण्डितो भवितुं शक्नोति ?	कैसे आचार्य्य से पढ़के पण्डित हो सक्ता है ?
अनूचानतः ।	पूर्णविद्यावान् वक्ता से ।
अथ किमध्यापयिष्यते भवताहम् ?	अब इस के अनन्तर हम को क्या पढ़ाइये गा ?
अष्टाऽध्यायी महाभाष्यम् ।	अष्टाध्यायी और महाभाष्य ।
किमनेन पठितेन भविष्यति ?	इस के पढ़ने से क्या होगा ?
शब्दार्थसम्बन्धविज्ञानम् ।	शब्द अर्थ और सम्बन्धों का यथार्थ बोध ।
पुनः क्रमेण किं किमध्येतव्यम्?	फिर क्रम से क्या २ पढ़ना चाहिये?

शिक्षाकल्पनिघण्टुनिरुक्तछन्दोज्योतिषाणि वेदानामङ्गानि मीमांसावैशेषिकन्याययोगसांख्यवेदान्तान्युपाङ्गान्यायुर्धनुर्गान्धर्वार्थानुपवेदानैतरेयशतपथसामगोपथब्राह्मणान्यधीत्य ऋग्यजुस्सामाऽथर्ववेदान् पठन्तु।

शिक्षा, कल्प, निघण्टु, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष्, वेदों के अङ्ग। मीमांसा, वैशेषिक, न्याय, योग, सांख्य और वेदान्त उपांग। आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद और अर्थवेद, उपवेद। ऐतरेय, शतपथ, साम और गोपथ ब्राह्मण ग्रन्थों को पढ़के ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद को पढ़ो।

एतत्सर्वं विदित्वा किं कार्य्यम्?

इन सब को जान के फिर क्या करना चाहिये?

धर्म्मजिज्ञासाऽनुष्ठाने एतेषामेवाऽध्यापनं च।

धर्म्म के जानने की इच्छा तथा उस का अनुष्ठान और इन्हीं को सर्वदा पढ़ना।

नामनिवासस्थानप्रकरणम्।

तव किन्नामास्ति? — तेरा क्या नाम है?

देवदत्तः। — देवदत्त।

कोऽभिजनो युवयोर्वर्त्तते? — तुम दोनों का जन्मदेश कौन है?

कुरुक्षेत्रम्। — कुरुक्षेत्र देश।

युष्माकं जन्मदेशः को विद्यते? — तुम्हारा जन्मदेश कौन है?

पञ्चालाः। — पञ्जाब।

भवन्तः कुत्रत्याः? — आप कहां के हो?

SGDF

वयं दाक्षिणात्याः स्म ।	हम दक्षिणी हैं ।
तत्र का पूर्वः ?	वहां आप के निवास की कौन नगरी है ?
मुम्बापुरी ।	मुम्बई ।
इमे क्व निवसन्ति ?	ये लोग कहां रहते हैं ?
नयपाले ।	नयपाल में ।
अयं किमधीते ?	यह क्या पढ़ता है ?
व्याकरणम् ।	व्याकरण को ।
त्वया किमधीतम् ?	तूने क्या पढ़ा है ?
न्यायशास्त्रम् ।	न्याय शास्त्र ।
अयं भवदीयश्छात्रः किं प्रचर्च्चयति ?	यह आप का विद्यार्थी क्या पढ़ता है ?
ऋग्वेदम् ।	ऋग्वेद को ।
त्वं किं कर्त्तुं गच्छसि ?	तू क्या करने को जाता है ?
पाठाय व्रजामि ।	पढ़ने के लिये जाता हूं ।
कस्मादधीषे ?	किस से पढ़ता है ?
यज्ञदत्तात् ।	यज्ञदत्त से ।
इमे कुतोऽधीयते ?	ये किस से पढ़ते हैं ?
विष्णुमित्रात् ।	विष्णुमित्र से ।
त्वयि पठति कियन्तः संवत्सरा व्यतीताः ?	तुझ को पढ़ते हुए कितने वर्ष बीते?
पञ्च ।	पांच ।
भवान् कति वार्षिकः ?	आप कितने वर्ष के हुए ?

SGDF

त्रयोदशवार्षिकः ।	तेरह वर्ष के ।
त्वया पठनारम्भः कदा कृतः ?	तूने पढ़ने का आरंभ कब किया था?
यदाहमष्टवार्षिकोऽभूवम् ।	जब मैं आठ वर्ष का हुआ था ।
तव मातापितरौ जीवतो न वा ?	तेरे माता पिता जीते हैं वा नहीं ?
जीवतः ।	जीते हैं ।
तव कति भ्रातरो भगिन्यश्च ?	तेरे कितने भाई और बहिन हैं ?
त्रयो भ्रातरश्चैका भगिन्यस्ति।	तीन भाई और एक बहिन है ।
तेषु त्वं ज्येष्ठस्ते, सा, वा ?	उन में तू ज्येष्ठ वा तेरे भाई अथवा बहिन ?
अहमेवाऽग्रजोस्मि ।	मैंही सब से पहिले जन्मा हूं ।
तव पितरौ विद्वांसौ न वा ?	तेरे माता पिता विद्या पढ़े हैं वा नहीं?
महाविद्वांसौ स्तः ।	बड़े विद्वान् हैं ।
तर्हि त्वया पित्रोः सकाशात्कुतो न विद्या गृहीता ?	तो तूने माता पिता से विद्या ग्रहण क्यों न की ?
अष्टमवर्षपर्य्यन्तं कृता ।	आठवें वर्ष पर्य्यन्त की थी ।
अत ऊर्ध्वं कुतो न कृता ?	इस से आगे क्यों न की ?
मातृमान् पितृमानाचार्य्यवान् पुरुषो वेदेति शास्त्रविधेः ।	माता पिता से आठवें वर्ष पर्य्यन्त इस के आगे आचार्य से पढ़ने का शास्त्र में विधान है इस से ।
अन्यच्च गृहे कार्यबाहुल्येन निरन्तरमध्ययनमेव न जायते ।	और भी घर में बहुत काम होने से निरन्तर पढ़ना ही नहीं होता ।
अतः परं कियद्वर्षपर्यन्तमध्येष्यसे?	इस के आगे कितने वर्ष पर्यन्त पढ़ेगा?
पञ्चत्रिंशद्वर्षाणि ।	पैंतीस वर्ष तक ।

SGDF
Sri Gangeshwari Digital Foundation

गृहाश्रमप्रकरणम् ॥

पुनस्ते का चिकीर्षाऽस्ति ?

फिर तुझको क्या करने की इच्छा है ?

गृहाऽऽश्रमस्य ।

गृहाश्रम की ।

किंच भोः पूर्णविद्यस्य जितेन्द्रियस्य परोपकारकरणाय सन्न्यासाश्रमग्रहणं शास्त्रोक्तमस्ति तन्न करिष्यसि ?

क्योंजी ? जिस को पूर्ण विद्या और जो जितेन्द्रिय है उस को परोपकार करने के लिये सन्न्यासाश्रम का ग्रहण करना शास्त्रोक्त है इस को न करो गे ?

किं गृहाश्रमे परोपकारो न भवति ?

क्या गृहाश्रम में परोपकार नहीं होता ?

यादृशः सन्न्यासाश्रमिणा कर्तुं शक्यते न तादृशो गृहाश्रमिणाऽनेककार्यैः प्रतिबन्धकत्वेनाऽस्य सर्वत्र भ्रमणाशक्यत्वात् ।

जैसा सन्न्यासाश्रमी से मनुष्यों का उपकार हो सकता है वैसा गृहाश्रमी से नहीं हो सकता क्योंकि अनेक कामों की रुकावट से इस का सर्वत्र भ्रमण हो नहीं हो सकता ।

भोजनप्रकरणम् ॥

नित्यः स्वाध्यायो जातो भोजनसमय आगतो गन्तव्यम् ।

नित्य का पढ़ना पढ़ाना हो गया भोजन समय आया चलना चाहिये ।

तव पाकशालायां प्रत्यहं भोजनाय किं २ पच्यते ?

तुम्हारी पाकशाला में प्रतिदिन भोजन के लिये क्या २ पकाया जाता है ?

शाकसूपौदश्वित्कौदनापूपादयः ।

शाक, दाल, कढी, भात, पुआ और रोटी आदि ।

किं वः पायसादिमधुरेषु रुचिर्नास्ति ?	क्या आप लोगों को खीर आदि मीठे भोजनों में रुचि नहीं है ?
अस्ति खलु परन्त्वेतानि कदाचिद् २ भवन्ति ।	है सही परन्तु ये भोजन कभी २ होते हैं।
कदाचिच्छष्कुलीश्रीखण्डादयोऽपि भवन्ति नवा ?	कभी पूरी कचोरी शिखरन आदि भी होते हैं वा नहीं ?
भवन्ति परन्तु यथर्त्तुयोगम् ।	होते हैं परन्तु जैसा ऋतु का योग हो।
सत्यमस्माकमपि भोजनादिकमेवमेव निष्पद्यते ।	ठीक है हमारे भी भोजन आदि ऐसे ही बनते हैं ।
त्वं भोजनं करिष्यसि नवा ?	तू भोजन करेगा वा नहीं ?
अद्य न करोम्यजीर्णतास्ति ।	आज नहीं करूंगा अजीर्णता है ।
अधिकभोजनस्येदमेव फलम् ।	अधिक भोजन का यही फल है ।
बुद्धिमता तु यावज्जीर्यते तावदेव भुज्यते ।	बुद्धिमान् पुरुष तो जितना पचे उतना ही खाता है ।
अतिस्वल्पे भुक्ते शरीरबलं ह्रसत्यधिके चातः सर्वदा मिताहरी भवेत् ।	बहुत कम और अत्यधिक भोजन करने में शरीर का बल घटता है इस से सब दिन मिताऽऽहारी होवे।
योऽन्यथाऽऽहारव्यवहारौ करोति स कथं न दुःखी जायेत ?	जो उलट पलट आहार और व्यवहार करता है वह क्यों न दुःखी होवे ?
येन शरीराच्छ्रमो न क्रियते स नैव शरीरसुखमाप्नोति ।	जो शरीर को प्राप्त होकर परिश्रम नहीं करता वह शरीर के सुख को प्राप्त नहीं होता ।

SGDF
Sri Gurudev Digital Foundation

येनात्मना पुरुषार्थो न विधीयते तस्यात्मनो बलमपि न जायते ।	जो आत्मा से पुरुषार्थ नहीं करता उस को आत्मा का बल भी नहीं होता ।
तस्मात्सर्वैर्मनुष्यैर्यथाशक्ति सत्क्रिया नित्यं साधनीया ।	इस से सब मनुष्यों को यथाशक्ति उत्तम कर्मों की साधना नित्य करनी चाहिये ।
भो देवदत्त त्वामहं निमन्त्रये ।	हे देवदत्त मैं तुम्हारा निमंत्रण करता हूं ।
मन्येऽहं कदा खल्वागच्छेयम् ?	मैं मानता हूं परन्तु किस समय आऊं ?
श्वो द्वितीयप्रहरमध्ये आगन्तव्यम् ।	कल दो पहर दिन चढ़े आना चाहिये ।
आगच्छ भो आसनमध्यास्स्व ।	हे सुजन आइये आसन पर बैठिये ।
भवता ममोपरि महती कृपा कृता ।	आप ने मुझ पर बड़ी कृपा की ।

देशदेशान्तरप्रकरणम् ॥

भवानेतान् जानतीमे महाविद्वांसः सन्ति ।	आप इन को जानते हैं ये बड़े विद्वान् हैं ।
किन्नामान एते कुत्रत्याः खलु?	इन के क्या नाम और ये कहां २ के रहने वाले हैं ?
अयं यज्ञदत्तः काशीनिवासी ।	यह यज्ञदत्त काशी में निवास करता है ।
विष्णुमित्रोऽयं कुरुक्षेत्रवास्तव्यः ।	यह विष्णुमित्र कुरुक्षेत्र में बसता है ।
सोमदत्तोयं माथुरः ।	यह सोमदत्त मथुरा में रहता है ।
अयं सुशर्मा पर्वतीयः ।	यह सुशर्म्मा पर्वत में रहता है ।
अयमाश्वलायनो दाक्षिणात्योऽस्ति ।	यह आश्वलायन दक्षिणी है ।

SGDF
Sri Gargeshwari Digital Foundation

अयं जयदेवः पाश्चात्यो वर्तते ।	यह जयदेव पश्चिम देश वासी है ।
अयं कुमारभट्टो वाङ्गो विद्यते ।	यह कुमारभट्ट बंगाली है ।
अयं कापिलेयः पाताले निवसति ।	यह कापिलेय पाताल अर्थात् अमेरिका में रहता है ।
अयं चित्रभानुर्हरिवर्षस्थः ।	यह चित्रभानु हिमालय से उत्तर हरिवर्ष अर्थात् यूरोप में रहता है ।
इमौ सुकामसुभद्रौ चीननिकायौ ।	ये सुकाम और सुभद्र चीनके वासी हैं ।
अयं सुमित्रो गन्धारस्थायी ।	यह सुमित्र गन्धार अर्थात् काबिल कन्धार का रहने वाला है ।
अयं सुभटो लङ्काजः ।	यह सुभट लंका में जन्मा है ।
इमे पंच सुवीरातिबलसुकर्मसुधर्मशतधन्वानो मारवाः ।	सुवीर अतिबल सुकर्मा सुधर्मा और शतधन्वा ये पांच मारवाड़ के रहने वाले हैं ।
एते मया आमन्त्रिताः स्वस्वस्थानादागताः ।	ये सब मेरे बुलाये हुए अपने २ घर से आये हैं ।
इमे शिवकृष्णगोपालमाधवसुचन्द्रप्रक्रमभूदेवचित्रसेनमहारथा अत्रत्याः ।	शिव, कृष्ण, गोपाल, माधव, सुचन्द्र, प्रक्रम, भूदेव, चित्रसेन और महारथ ये दश इस मध्यदेश के रहने वाले हैं ।
अहो भाग्यं मे यद् भवत्कृपयैतेषामपि समागमो जातः ।	मेरा बड़ाभाग्य है कि जो आप की कृपासे इन सत्पुरुषोंका भी मिलाप हुआ ।
अहमपि सभवतः सर्वानेतान्निमन्त्रयितुमिच्छामि ।	मैं भी आप के समेत इन सब का निमन्त्रण करना चाहता हूं ।

अस्माभिर्भवन्निमन्त्रणमूरीकृतम्।	हमने आप का निमन्त्रण स्वीकार किया।
प्रीतोऽस्मि परन्तु भवद्भोजनार्थं किं किं पक्तव्यम् ?	आप के निमन्त्रण मानने से मैं बड़ा प्रसन्न हुआ परन्तु आप के भोजन के लिये क्या २ पकाया जाय ?
यद्यद्भोक्तुमिच्छाऽस्ति तत्तदाज्ञापयन्तु ।	जिस २ पदार्थ के भोजन की इच्छा हो उस २ की आज्ञा कीजिये ।
भवान् देशकालज्ञः कथनेन किं यथायोग्यमेव पक्तव्यम् ।	आप देशकाल को जानते हैं कहने से क्या यथायोग्य ही पकाना चाहिये।
सत्यमेवमेव करिष्यामि ।	ठीक है ऐसा ही करूंगा ।
उत्तिष्ठत भोजनसमय आगतः पाकः सिद्धो वर्त्तते ।	उठिये भोजनसमय आया पाक तयार है ।
भो भृत्य पाद्यमर्घ्यमाचमनीयं जलं देहि ।	हे नौकर इन को पग हाथ मुख धोने के लिये जल दे ।
इदमानीतं गृह्यताम् ।	यह लाया लीजिये ।
भोः पाचकाः सर्वान् पदार्थान् क्रमेण परिवेविष्ट ।	हे पाचकलोगो सब पदार्थों को क्रम से परोसो ।
भुञ्जीध्वम् ।	भोजन कीजिये ।
भोजनस्य सर्वे पदार्थाः श्रेष्ठा जाता न वा ?	भोजन के सब पदार्थ अच्छे हुये हैं वा नहीं ?
अत्युत्तमाःसम्पन्नाःकिंकथनीयम्।	क्या कहना है बड़े उत्तम हुए हैं।
भवता किंचित् पायसं ग्राह्यं वा यस्येच्छाऽस्ति ।	आप थोड़ी सी खीर लीजिये वा जिस की इच्छा हो।

SGDF Sri Gangeshwari Digital Foundation

प्रभूतं भुक्तं तृप्ताः स्मः ।
बहुत रुचि से भोजन किया तृप्त हो गये हैं ।

तर्ह्युत्तिष्ठत ।
तो उठिये ।

जलं देहि ।
जल दे ।

गृह्यताम् ।
लीजिये ।

ताम्बूलादीन्यानीयताम् ।
पान बीड़े इलायची आदि लाओ ।

इमानि सन्ति गृह्णन्तु ।
ये हैं लीजिये ।

सभाप्रकरणम् ॥

इदानीं सभायां काचिच्चर्चा विधेया ।
अब सभा में कुछ वार्त्तालाप करना चाहिये ।

धर्म्मः किं लक्षणोऽस्तीति पृच्छामि ?
मैं पूछता हूं कि धर्म्म का क्या लक्षण है ?

वेदप्रतिपाद्यो न्याय्यः पक्षपातरहितो यश्च परोपकारसत्याऽऽचरणलक्षणः ।
वेदोक्तन्यायानुकूल पक्षपातरहित और जो पराया उपकार तथा सत्याचरण युक्त है उसी को धर्म्म जानना चाहिये ।

ईश्वरः कोऽस्तीति ब्रूहि ?
ईश्वर किस को कहते हैं आप कहिये?

यः सच्चिदानन्दस्वरूपः सत्यगुणकर्म्मस्वभावः ।
जो सच्चिदानन्दस्वरूप और जिस के गुण कर्म स्वभाव सत्य ही हैं वह ईश्वर कहाता है ।

मनुष्यैः परस्परं कथं वर्त्तितव्यम् ?
मनुष्यों को एक दूसरे के साथ कैसे २ वर्त्तना चाहिये ?

SGDF Sri Gangeshwari Digital Foundation

धर्म्मसुशीलतापरोपकारैः सह यथायोग्यम् ।

धर्म श्रेष्ठ स्वभाव और परोपकार के साथ जिन से जैसा व्यवहार करना योग्य हो वैसा ही उन से वर्त्तना चाहिये ।

आर्यावर्त्तचक्रवर्त्तिराजप्रकरणम् ॥

अस्मिन्नार्य्यावर्त्ते पुरा के के चक्रवर्त्तिराजा अभूवन् ?

इस आर्य्यावर्त्त देश में पहिले कौन २ चक्रवर्त्ती राजा हुए हैं ?

स्वयंभुवाद्या युधिष्ठिरपर्य्यन्ताः ।

स्वयंभू से लेके युधिष्ठिर पर्य्यन्त ।

चक्रवर्त्तिशब्दस्य कः पदार्थः ?

चक्रवर्त्ति शब्द का क्या अर्थ है ?

य एकस्मिन् भूगोले स्वकीयामाज्ञां प्रवर्त्तयितुं समर्थाः ।

जो एक भूगोल भर में अपनी राजनीतिरूप आज्ञा को चलाने में समर्थ हों ।

ते कीदृशीमाज्ञां प्राचीचरन् ?

वे कैसी आज्ञा का प्रचार करते थे ?

यया धार्मिकाणांपालनं दुष्टानां ताड़नं च भवेत् ।

जिस से धर्मियों का पालन और दुष्टों का ताड़न होवे ।

राजप्रजालक्षणराजनीत्यनीतिप्रकरणम् ॥

राजा को भवितुं शक्नोति ?

राजा कौन हो सकता है ?

यो धार्मिकाणां सभाया अधिपतित्वे योग्यो भवेत् ।

जो धर्मात्माओं की सभा का सभापति होने योग्य होवे ।

यः प्रजां पीड़यित्वा स्वार्थं साधयेत् स राजा भवितुमर्होऽस्ति न वा ?

जो प्रजा को दुःख दे कर अपना प्रयोजन साधे वह राजा हो सकता है वा नहीं ?

SGDF
Sri Gangeshwari Digital Foundation

नहि नहि नहि स तु दस्युःखलु।

नहीं नहीं नहीं वह तो डाकू ही है।

या राजद्रोहिणी सा तु न प्रजा किन्तु स्तेनेन तुल्या मन्तव्या।

जो राजव्यवहार में विरोध करे वह प्रजा तो नहीं किन्तु उस को चोर के समान जानना चाहिये।

कथंभूता जनाः प्रजा भवितुमर्हाः ?

कैसे मनुष्य प्रजा होने को योग्य हैं ?

ये धार्मिकाः सततं राजप्रियकारिणः।

जो धर्मात्मा और निरन्तर राजा के प्रियकारी हों।

राजपुरुषैरप्येवमेव प्रजाप्रियकारिभिः सदा भवितव्यम्।

राजसम्बन्धी पुरुषों को भी वैसेही प्रजा के प्रिय करने में सदा रहना चाहिये।

शत्रुवशकरणप्रकरणम् ॥

एते शत्रुभिः सह कथं वर्त्तेरन् ?

ये लोग शत्रुओं के साथ कैसे वर्त्तें ?

राजप्रजोत्तमपुरुषैररयः सामदामदण्डभेदैर्वशमानेयाः।

राजा और प्रजा के श्रेष्ठ पुरुषों को योग्य है कि अरियों को (साम) मिलाप (दाम) गुप्तदण्ड और (दण्ड) उन को दण्ड (भेद) आपस में उन को फोड़ देना उन से वश में करना चाहिये।

सदा स्वराज्यप्रजासेनाकोशधर्मविद्यासुशिक्षा वर्द्धनीयाः।

सब दिन अपना राज्य, प्रजा, सेना, कोष, धर्म्म, विद्या और श्रेष्ठ शिक्षा बढ़ाते रहना चाहिये।

SGDF Sri Gurudev Digital Foundation

यथाऽधर्माविद्यादुष्टशिक्षादस्युचोरादयो न वर्द्धेरंस्तथा सततमनुष्ठेयम् ।

जिस प्रकार से अधर्म अविद्या बुरी शिक्षा डांकू और चोर आदि न बढ़ें वैसा निरन्तर पुरुषार्थ करना चाहिये ।

धार्म्मिकैः सह कदापि न योद्धव्यम् ।

धर्मात्माओं के साथ कभी लड़ाई न करनी चाहिये ।

निर्जिता अपि दुष्टा विनयेन सत्कर्त्तव्याः ।

पराजित किये शत्रुओं का भी विनय के साथ मान्य करना चाहिये ।

राजप्रजाजनाः प्राणवत् परस्परं संपोष्य सुखिनो भवन्तु ।

राजा और प्रजा प्राण के तुल्य एक दूसरे की पुष्टि करके सदा सुखी रहें ।

परस्परं निर्बलितकरणेन क्षयरोगिवत् सर्वे विनश्यन्ति ।

एक दूसरे को निर्बल करने से क्षयीरोग वाले के समान सब नष्ट हो जाते हैं ।

सदा ब्रह्मचर्येण विद्यया च शरीरात्मबलमेधनीयम् ।

सब काल में ब्रह्मचर्य्य और विद्या से शरीर और आत्मा का बल बढ़ाते रहना चाहिये ।

यथादेशकालं पुरुषार्थेन यथावत् कर्माणि कृत्वा सर्वथा सुखयितव्यम् ।

देश काल के अनुसार उद्यम से ठीक २ कर्म करके सब प्रकार सुखी रहना चाहिये ।

वैश्यव्यवहारप्रकरणम् ॥

वैश्याः कथं वर्त्तेरन् ?

बनिये लोग कैसे बर्तें ?

SGDF Sri Gangeshwar Digital Foundation

सर्वां देशभाषा लेखाव्यवहारं च विज्ञाय पशुपालनक्रयविक्रयादिव्यापारकुसीदवृद्धिकृषिकर्माणि धर्मेण कुर्वन्तः ।

सब देशभाषा और हिसाब को ठीक२ जान कर पशुओं की रक्षा लेन देन आदि व्यवहार ब्याज वृद्धि और खेतीकर्म धर्म के साथ करते हुए ।

कुसीदग्रहणप्रकरणम् ॥

यद्येकवारन्दद्यात् गृह्णीयाच्च तर्हि कुसीदवृद्ध्या द्वैगुण्ये धर्मोऽधिकेऽधर्म इति वेदितव्यम् ।

जो एक बार दें लें तो ब्याज वृद्धि सहित मूल धन द्विगुण तक लेने में धर्म और अधिक लेने में अधर्म होता है ऐसा जानना चाहिये ।

प्रतिमासं प्रतिवर्षं वा यदि कुसीदं गृह्णीयाद्यदा समूलं द्विगुणं धनमागच्छेत्तदा मूलमपि त्याज्यम् ।

जो महीने २ अथवा वर्ष २ में ब्याज लेता जाय तो जब दूना धन आ जाय फिर आगे कुछ भी न लेना चाहिये ।

नौकाविमानादिचालनप्रकरणम् ॥

त्वं नौकाश्चालयसि न वा ?

तू नाव चलाता है वा नहीं ?

चालयामि ।

चलाता हूं ।

नदीषु वा समुद्रेषु ?

नदियों अथवा समुद्रों में ?

उभयत्र चालयामि ।

दोनों में चलाता हूं ।

कस्यान्दिशि कस्मिन्देशे गच्छन्ति ?

किस दिशा और किस देश में जाती हैं ?

SGDF

सर्वासु दिक्षु पातालदेशपर्य्यन्तम् ।	सब दिशाओं में पाताल देश अर्थात् अमरीका देश पर्य्यन्त ।
ताः कीदृश्यः सन्ति केन चलन्ति?	वे नौका कैसी और किससे चलती हैं ?
कैवर्त्तवाय्वग्निर्जलकलावाष्पादिभिः ।	मल्लाह वायु अग्नि जल कलायन्त्र और भाफ आदि से ।
याः पुरुषाश्चालयन्ति ता ह्रस्वा या महत्यस्ता वाय्वादिभिश्चाल्यन्ते ताश्चाश्वतरीश्यामकर्णाश्वाख्याः सन्ति ।	जिन को मनुष्य चलाते हैं वे छोटी २ नौका और जो बड़ी होती हैं वे वायु आदि से चलाई जाती हैं उन के अश्वतरी और श्यामकर्णाश्व आदि नाम हैं ।
विमानादिभिरपि सर्वत्र गच्छागमश्च ।	और विमान आदि से सर्वत्र आया जाया करते हैं ।

क्रयविक्रयप्रकरणम् ॥

अस्य किम्मूल्यम् ?	इस का क्या मूल्य है ?
पञ्चरूप्याणि ।	पांच रुपये ।
गृहाणेदं वस्त्रं देहि ।	लीजिये पांच रुपये यह वस्त्र दीजिये ।
अद्यश्वो घृतस्य कोऽर्घः ?	आजकल घी का क्या भाव है ?
मुद्रैकया सपादप्रस्थं विक्रीणते ।	एक रुपया का सवासेर बेचते हैं ।
गुडस्य को भावः ?	गुड का क्या भाव है ?
अष्टभिः पणैरेकसेटकमात्रं ददति ।	दो आने का एक सेरभर देते हैं ।
त्वमापणं गच्छ एलामानय ।	तू दूकान को जा इलायची ले आ ।
आनीता गृहाण ।	ले आया लीजिये ।

SGDF Sri Gangadharji Digital Foundation

कस्य हट्टे दधिदुग्धे अच्छे प्राप्नुतः ?	किस की दूकान पर दूध और दही अच्छे मिलते हैं ?
धनपालस्य ।	धनपाल की ।
स सत्येनैव क्रयविक्रयौ करोति ।	वह सत्य ही से लेन देन करता है ।
श्रीपतिर्वणिक् कीदृशोऽस्ति ?	श्रीपति बनिया कैसा है ?
स मिथ्याकारी ।	वह झूठा है ।
अस्मिन्संवत्सरे कियाल्लाभो व्ययश्च जातः ?	इस वर्ष में कितना लाभ और खर्च हुआ ?
पंचलक्षाणि लाभो लक्षद्वयस्य व्ययश्च ।	पांच लाख रुपये लाभ और दो लाख खर्च हुए ।
मम खल्वस्मिन् वर्षे लक्षत्रयस्य हानिर्जाता ।	मेरी तो इस वर्ष में तीन लाख की हानि होगई ।
कस्तूरी कस्मादानीयते ?	कस्तूरी कहां से लाई जाती है ?
नयपालात् ।	नयपाल से ।
बहुमूल्यमाविकं कुत आनयन्ति ?	दुशाले आदि कहां से लाते हैं ?
कश्मीरात् ।	कश्मीर से ।

गमनागमन-प्रकरणम् ॥

कुत्र गच्छसि ?	कहां जाते हो ?
पाटलिपुत्रकम् ।	पटने को ।
कदाऽऽगमिष्यसि ?	कब आओगे ?
एकमासे ।	एक महीने में ।
स क्व गतः ?	वह कहां गया ?
शाकमानेतुम् ।	शाक लेने को ।

SGDF Sri Gangadharan Digital Foundation

क्षेत्रवपन-प्रकरणम् ॥

क्षेत्राणि कर्षन्तु ।	खेत जोतो ।
वीजान्युप्तानि न वा ?	बीज बोये वा न हों ?
उप्तानि ।	बोदिये ।
अस्मिन् क्षेत्रे किमुप्तम् ?	इस खेत में क्या बोया है ?
व्रीहयः ।	धान ।
एतस्मिन् ?	इस में ?
गोधूमाः ।	गेहूं ।
अस्मिन् किं वपन्ति ?	इस खेत में क्या बोते हैं ?
तिलमुद्गमाषाढकीः ।	तिल मूंग उड़द और अरहर ।
एतस्मिन् किमुप्यते ?	इस में क्या बोया जाता है ?
यवाः ।	जव ।

सस्यच्छेदन-प्रकरणम् ।

संप्रति केदाराः पक्वाः ।	इस समय खेत पक गये हैं ।
यदि पक्वाः स्युस्तर्हि लुनन्तु ।	जो पक गये हों तो काटो ।
इदानीं कृषीबला अन्योन्यं केदारान् व्यतिलुनन्ति ।	इस समय खेती करनेवाले आपस में एकदूसरे का पारापारी खेत काटते हैं ।
ऐषमो धान्यानि प्रभूतानि जातानि अत एवैकस्या मुद्राया गोधूमाः खारीप्रमिता अन्यानि तण्डुलादीन्यपि किंचिदधिकन्यूनानि मिलन्ति ।	इस साल में धान्य बहुत हुये हैं इसी से एक रुपये के गेहूं एक मन और चावल आदि अन्न भी मन से कुछ अधिक न्यून मिलते हैं ।

SGDF

गवादिदोहनपरिमाण–प्रकरणम् ।

इयं गौर्दुग्धन्ददाति न वा ?	यह गौ दूध देती है वा नहीं ?
ददाति ।	देती है ।
इयं महिषी कियद् दुग्धं ददाति?	यह भैंस कितना दूध देती है ?
दशप्रस्थाः ।	दश सेर ।
तवाऽजावयः सन्ति न वा ?	तेरे बकरी भेड हैं वा नहीं ?
सन्ति ।	हैं ।
प्रतिदिनं ते कियद् दुग्धं जायते ?	नित्य तेरे कितना दूध होता है ?
पञ्च खार्यः ।	पांच मन ।
नित्यं किं परिमाणे घृतनवनीते भवतः ?	प्रतिदिन कितना घी और मक्खन होता है ?
सार्द्धद्वादशप्रस्थे ।	साढे बारह सेर ।
प्रत्यहं कियद् भुज्यते कियच्च विक्रीयते ?	प्रतिदिन कितना खाया जाता और कितना बिकता है ?
सार्द्धद्विप्रस्थं भुज्यते दशप्रस्थं च विक्रीयते ।	अढाईसेर खाया जाता और दश सेर बिकता है ।

क्रयविक्रयार्घ–प्रकरणम् ।

एतद्रूप्यैकेन कियन् मिलति ?	ये घी और मक्खन एक रुपया का कितना मिलता है ?
त्रित्रि प्रस्थम् ।	तीन तीन सेर ।
तैलस्य कियन् मूल्यम् ?	तेल का क्या मूल्य है ?
मुद्रापादेन सेटकद्वयं प्राप्यते ।	चार आने का दो सेर मिलता है ।

SGDF
Sri Gangadharan Digital Foundation

अस्मिन्नगरे कति हट्टास्सन्ति ?	इस नगर में कितनी दुकानें हैं ?
पञ्च सहस्राणि ।	पांच हजार ।

कुसीद-प्रकरणम् ॥

शतं मुद्रा देहि ।	सौ रुपये दीजिये ।
ददामि परन्तु कियत् कुसीदं दास्यसि ?	दूंगा परन्तु कितना व्याज देगा ?
प्रतिमासं मुद्रार्द्धम् ।	प्रति महीने में आठ आना ।

उत्तमर्णाधमर्ण-प्रकरणम् ॥

भो अधमर्ण यावद्धनं त्वया पूर्वं गृहीतं तदिदानीं देहि ।	हे ऋणिया जो धन तूने पहिले लिया था वह अब दे ।
मम सांप्रतं तु दातुं सामर्थ्यं नास्ति ।	मेरा इस समय तो देने का सामर्थ्य नहीं है ।
कदा दास्यसि ?	कब देगा ?
मासद्वयाऽनन्तरम् ।	दो महीने के पीछे ।
यद्येतावति समये न दास्यसि चेत्तर्हि राजनियमान्निग्रहीष्यामि ।	जो तू इतने समय में न देगा तो राजप्रबन्ध से पकड़ा के लूंगा ।
यद्येवं कुर्य्यां तर्हि तथैव ग्रहीतव्यम् ।	जो ऐसा करूं तो वैसे ही लेना ।

राजप्रजासंबन्ध-प्रकरणम् ॥

भो राजन् ममायमृणं न ददाति ।	हे राजन् मेरा यह ऋण नहीं देता ।
यदा तेन गृहीतं तदानीन्तनः कश्चित्साक्षी वर्त्तते नवा ?	जब उसने लिया था उस समय का कोई साक्षी वर्तमान है वा नहीं?

SGDF Sri Gangadhareshwar Digital Foundation

अस्ति ।	है ।
तर्ह्यानय ।	तो लाओ ।
आनीतोऽयमस्ति ।	लाया यह है ।

साक्षि-प्रकरणम् ॥

भोः साक्षिंस्त्वमत्र किञ्चिज्जानासि नवा ?	हे साक्षी तू इस विषय में कुछ जानता है वा नहीं ?
जानामि ।	जानता हूं ।
यादृशंजानासितादृशं सत्यं ब्रूहि ।	जैसा जानता है वैसा सच कह ।
सत्यं वदामि ।	सत्य कहता हूं ।
अस्मादनेन मत्समक्षे सहस्त्रं मुद्रा गृहीताः ।	इस से इसने मेरे सामने सहस्र रुपये लिये थे ।
ओ भृत्य तं शीघ्रमानय ।	ओ नोकर उसको जलदी लेआ ।
आनयामि ।	लाता हूं ।
गच्छ राजसभायां राज्ञा त्वमाहूतोऽसि ।	चल राजसभा में राजा ने तुझ को बुलाया है ।
चलामि ।	चलता हूं ।
भो राजन्नुपस्थितस्सः ।	हे राजन् वह आया है ।
त्वयाऽस्यर्णं कुतो नादायि ?	तूने इस का ऋण क्यों नहीं दिया ?
अस्मिन् समये तु मम सामर्थ्यन्नास्ति षण्मासानन्तरं दास्यामि ।	इस समय तो मेरा सामर्थ्य नहीं है परन्तु छः महीने के पीछे दूंगा ।
पुनर्विलम्बन्तु न करिष्यसि ?	फिर देर तो न करेगा ?

SGDF Sri Gurudev ... Digital Foundation

महाराजकदापि न करिष्यामि ।	महाराज कभी न करूंगा ।
अच्छ गच्छ धनपाल यदि सप्तमे मास्ययं न दास्यति तर्ह्येनं निगृह्य दापयिष्यामि ।	अच्छा जाओ धनपाल जो यह सातवें महीने में न देगा तो इस को पकड़ के दिलादूंगा ।
अयं मम शतं मुद्रा गृहीत्वाऽधुना न ददाति ।	यह मेरे सौ रुपये ले के अब नहीं देता ।
किं च भो यदयं वदति तत् सत्यं न वा ?	क्यों जी जो ये कहता है वह सच है वा नहीं ?
मिथ्यैवाऽस्ति ।	झूठ ही है ।
अहन्तु जानाम्यपि नाऽस्य-मुद्रा मया कदा स्वीकृताः ।	मैं तो जानता भी नहीं कि इस के रुपये मैंने कब लिये थे ।
उभयोस्साक्षिणः सन्ति न वा ?	दोनों के साक्षी लोग हैं वा नहीं?
सन्ति ।	हैं ।
कुत्र वर्तन्ते ।	कहां वर्तमान हैं ।
इम उपतिष्ठन्ते ।	ये खड़े हैं ।
अनेन युष्माकं समक्षे शतं मुद्रा दत्ता न वा ?	इस ने तुम्हारे सामने सौ रुपये दिये वा नहीं ?
दत्तास्तु खलु ।	निश्चित दिये तो हैं ।
अनेन शतं मुद्रा गृहीता न वा?	इस ने सौ रुपये लिये वा नहीं ?
वयं न जानीमः ।	हम नहीं जानते ।
प्राड्विवाकेनोक्तम् ।	वकील ने कहा ।
अयमस्य साक्षिणश्च सर्वे मिथ्यावादिनः सन्ति ।	यह और इस के साक्षी लोग सब झूठ बोलने वाले हैं ।

SGDF Sri Gurudakshinam Digital Foundation

कुत इदमेतेषां परस्परं विरुद्धं वचोऽस्ति ।

क्योंकि यह इन लोगों का वचन परस्पर विरुद्ध है ।

यतस्त्वया मिथ्यालपितमत एव तवैकसंवत्सरपर्य्यन्तं कारागृहे बन्धः क्रियते ।

जिस से तूंने झूंठ बोला इसी कारण तेरा एक वर्ष तक बन्दीघर में बन्धन किया जाता है ।

अयमुत्तमर्णस्त्वदीयान् पदार्थान् गृहीत्वा विक्रीय वा स्वर्णं ग्रहीष्यति ।

यह सेठ तेरे पदार्थों को लेकर अथवा बेंच के अपने ऋण को ले लेगा ।

अयं मदीयानि पञ्चशतानि रूप्याणि स्वीकृत्य न ददाति ।

यह मेरे पांचसौ रुपये लेकर नहीं देता ।

कुतो न ददासि ?

तू क्यों नहीं देता ?

मया नैव गृहीताः कथं दद्याम् ।

मैंने लियेही नहीं कैसे दूं ।

अयम्मम लेखोऽस्ति पश्य तम् । आनय ।

यह मेरा लेख है देखिये इस को लाओ ।

गृह्यताम् ।

लीजिये ।

अयं लेखो मिथ्या प्रतिभाति ।

यह लेख झूंठ मालूम पड़ता है ।

तस्मात् त्वं षण्मासान् कारागृहे वस तवेमे साक्षिणश्च द्वौ-द्वौ मासौ तत्रैव वसेयुः ।

इस से तू छः महीने बन्दीगृह में रह और तेरे साक्षी भी दो दो महीने वहीं रहें ।

सेव्यसेवक-प्रकरणम् ॥

भो मङ्गलदास सेवार्थं कैङ्कर्यं करिष्यसि ?

हे मङ्गलदास सेवा के लिये नौकरी करेगा ?

SGDF
Sri Gangadharji Digital Foundation

करिष्यामि ।	करूंगी ।
किं प्रतिमासं मासिकं ग्रहीतुमिच्छसि ?	प्रतिमहीने कितना वेतन लिया चाहता है ?
पञ्चरूप्याणि ।	पांच रुपये ।
मयैतावद्दास्यते चेद् यथायोग्या परिचर्य्या विधेया ।	मैं इतना दूंगा जो तुझ से ठीक२ सेवा हो सकेगी ।
यदाहं भवन्तं सेविष्ये तदा भवानपि प्रसन्न एव भविष्यति ।	जब मैं आपकी सेवा करूंगा तब आप भी प्रसन्न ही होंगे ।
दन्तधावनमानय ।	दातुन ले आ ।
स्नानार्थं जलमानय ।	न्हाने के लिये जल ला ।
उत्तरीयं वस्त्रं देहि ।	अंगोछा दे ।
आसनं स्थापय ।	आसन रख ।
पाकं कुरु ।	रसोई कर ।
हे सूद त्वयाऽन्नं व्यञ्जनं च सुष्ठु सम्पादनीयम् ।	हे रसोइये तू अन्न और शाक आदि उत्तम बना ।
अद्य किं किं कुर्याम् ।	आज क्या २ करूं ।
पायसमोदकौदनसूपरोटिकाशाकान्युपव्यञ्जनादीनि च ।	खीर, लड्डू, चावल, रोटी, दाल, शाक और चटनी आदि भी ।

मिश्रित–प्रकरणम् ॥

नित्यप्रति किं वेतनं दास्यसि?	नित्यप्रति क्या नौकरी दोगे ?
प्रत्यहं द्वादश पणाः ।	प्रतिदिन बारह पैसे ।
वस्त्राणि श्लक्ष्णे पट्टे प्रक्षालनीयानि ।	कपड़े चिकने साफ पत्थर की पटिया पर धोने चाहियें ।

SGDF

गा वने चारय ।	गौयें बन में चरा ।
पुष्पबाटिकायां गन्तव्यमस्ति ।	फूलों की बगीची में जाना है ।
आम्रफलानि पक्वानि न वा ?	आम पके वा नहीं ?
पक्वानि सन्ति ।	पके हैं ।
उपानहावानय ।	जूते लाओ ।

गमनागमनप्रकरणम् ॥

अयं रक्तोष्णीषः क्व गच्छति ?	यह लालपगड़ीवाला कहांजाता है ?
स्वगृहम् ।	अपने घर को ।
अस्य कदा जन्माभूत् ?	इस का कब जनम हुआ था ?
पञ्च संवत्सरा अतीताः ।	पांच वर्ष बीते ।
परेद्युर्ग्रामो गन्तव्यः ।	कल गांव जाना चाहिये ।
गमिष्यामि ।	जाऊं गा ।
भवान् परेद्युः क्व गन्ता ?	आप कल कहां जाओ गे ?
अयोध्याम् ।	अयोध्या को ।
तत्र किं कार्यमस्ति ?	वहां क्या काम है ?
मित्रैःसह मेलनं कर्त्तव्यमस्ति ।	मित्रों के साथ मेल कर्त्तव्य है ।
कदागतोऽसि ?	कब आया है ?
इदानीमेवाऽऽगच्छामि ।	अभी आता हूं ।

अथ रोगप्रकरणम् ॥

अस्य कीदृशो रोगो वर्त्तते ?	इस को किस प्रकार का रोग है ?
जीर्णज्वरोऽस्ति ।	जीर्णज्वर है ।

SGDF
Sri Gurgeshwari Digital Foundation

औषधं देहि ।	ओषधी दे ।
ददामि ।	देता हूं ।
परन्तु पथ्यं सदा कर्त्तव्यं कुतो नहि पथ्येन विना रोगो निवर्त्तते ।	परन्तु पथ्य सदा करना चाहिये क्योंकि पथ्य के बिना रोग निवृत्त नहीं होता ।
अयं कुपथ्यकारित्वात् सदा रुग्णो वर्त्तते ।	यह कुपथ्यकारी होने से सदा रोगी रहता है ।
अस्य पित्तकोपो वर्त्तते ।	इस को पित्तकोप है ।
मम कफो वर्द्धते औषधं देहि ।	मेरे कफ बढ़ता जाता है ओषधि दीजिये ।
निदानं कृत्वा दास्यामि ।	रोग की परीक्षा करके दूंगा ।
अस्य महान् कासश्वासोऽस्ति ।	इस को बड़ा कासश्वास अर्थात् दमा है।
मम शरीरे तु वातव्याधिर्वर्त्तते ।	मेरे शरीर में तो बातव्याधि है ।
संग्रहणी निवृत्ता न वा ?	संग्रहणी छुटी वा नहीं?
अद्य पर्यन्तन्तु न निवृत्ता ।	आज तक तो नहीं छुटी ।
औषधं संसेव्य पथ्यं करोषि न वा ?	ओषधि का सेवन करके पथ्य करते हो वा नहीं ?
क्रियते परन्तु सुवैद्यो न मिलति कश्चिद्यः सम्यक् परीक्ष्यौषधं दद्यात् ।	करता तो हूं परन्तु अच्छा वैद्य कोई नहीं मिलता कि जो अच्छे प्रकार परीक्षा करके ओषधि देवे ।
तृषाऽस्ति चेज्जलं पिब ।	प्यास हो तो जल पी ।

SGDF
Sri Gurgeshwari Digital Foundation

मिश्रितप्रकरणम् ॥

इदानीं शीतं निवृत्तमुष्णसमय आगतः ।	अब तो शीत निवृत्त हुआ गरमी का समय आया ।
हेमन्ते क्व स्थितः ?	जाड़े में कहां रहा था ?
वंगेषु ।	बंगाल में ।
पश्य मेघोन्नतिं कथं गर्जति विद्युद्विद्योतते च ।	देखो मेघ की बढ़ती कैसा गर्जता और बिजुली चमकती है ।
अद्य महती वृष्टिर्जाता यया तड़ागा नद्यश्च पूरिताः ।	आज बड़ी वर्षा हुई जिस से तालाब और नदियां भर गईं ।
शृणु मयूराः सुशब्दयन्ति ।	सुनो मोर अच्छा शब्द करते हैं ।
कस्मात् स्थानादागतः ?	किस स्थान से आया ?
जंगलात् ।	जंगल से ।
तत्र त्वया कदापि सिंहो दृष्टो न वा ?	वहां तू ने कभी सिंह भी देखा था वा नहीं ?
बहुबारं दृष्टः ।	कई बेर देखा ।
नदी पूर्णा वर्त्तते कथमागतः ?	नदी भरी है कैसे आया ?
नौकया ।	नाव से ।
आरोहत हस्तिनं गच्छेम ।	चढो हाथी पर चलें ।
अहन्तु रथेनागच्छामि ।	मैं तो रथ से आता हूं ।
अहमश्वोपरि स्थित्वा गच्छेयं शिविकायां वा ।	मैं घोड़े पर अथवा पालकीपर चढ़के जाऊं ।
पश्य शारदं नभः कथं निर्म्मलं वर्त्तते ।	देखो शरद् ऋतु का आकाश कैसा निर्म्मल है ।

SGDF
Sri Gargeshwari Digital Foundation

चन्द्र उदितो न वा ? — चन्द्रमा उगा वा नहीं ?

इदानीन्तु नोदितः खलु । — इस समय तो नहीं उगा है ।

कीदृश्यस्तारकाः प्रकाशन्ते ? — किस प्रकार तारे प्रकाशमान हो रहे हैं ?

सूर्य्योदयाच्चलन्नागच्छामि । — सूर्योदय से चलता हुआ आता हूं ।

क्वापि भोजनं कृतन्न वा ? — कहीं भोजन किया वा नहीं ?

कृतम्मध्याह्नात्प्राक् । — किया था दोपहर से पहिले ।

अधुनाऽत्र कर्त्तव्यम् । — अब यहां कीजिये ।

करिष्यामि । — करूंगा ।

विवाहस्त्रीपुरुषालापप्रकरणम् ॥

त्वया कीदृशो विवाहः कृतः? — तूंने किसप्रकार का विवाह कियाथा?

स्वयंवरः । — स्वयंवर ।

स्त्र्यनुकूलास्ति न वा ? — स्त्री अनुकूल है वा नहीं ?

सर्वथाऽनुकूलाऽस्ति । — सब प्रकार से अनुकूल है।

कत्यपत्यानि जातानि सन्ति ? — कितने लड़के हुए हैं ?

चत्वारः पुत्रा द्वे कन्ये च । — चार पुत्र और दो कन्या ।

स्वामिन्नमस्ते । — स्वामीजी, नमस्ते अर्थात् मैं आप का सत्कार करती हूं ।

नमस्ते प्रिये । — नमस्ते प्रिया ।

काञ्चित्सेवामनुज्ञापय । — किसी सेवा की आज्ञा करिये।

सर्वथैव सेवसे पुनराज्ञापनस्य कावश्यकताऽस्ति । — सब प्रकार की सेवा करती ही हो फिर आज्ञा कराने की क्या आवश्यकता है।

SGDF Sri Gargeshwari Digital Foundation

अद्य भवाञ्छ्रमं कृतवानत उष्णेन जलेन स्नातव्यम् ।	आज आपने श्रम किया है इस कारण गरम जल से स्नान करना चाहिये।
गृहाणेदं जलमासनं च ।	लीजिये यह जल और आसन ।
इदानीं भ्रमणाय गन्तव्यम् ।	इस समय घूमने के लिये जाना चाहिये।
क्व गच्छेव ?	कहां चलें ?
उद्यानेषु ।	बगीचों में ।

स्त्रीश्वश्रूश्वशुरादिप्रकरणम् ॥

हे ! श्वश्रु सेवामाज्ञापय किं कुर्याम ?	हे ! सास सेवा की आज्ञा कीजिये क्या करूं ?
सुभगे जलं देहि ।	सुभगे जल दे ।
गृहाणेदमस्ति ।	लीजिये यह है ।
हे ! श्वशुर भवान् किमिच्छत्याज्ञापयतु ।	हे ! श्वशुर आप की क्या इच्छा है आज्ञा कीजिये ।
हे ! वशंवदे नित्यं सदाचारमाचर ।	हे ! वशंवदे नित्य सती स्त्रियों का आचरण कर ।

अथ ननन्दभ्रातृजायावादप्रकरणम् ॥

हे ! ननन्दरिहागच्छ वार्तालापं कुर्याव ।	हे ! ननन्द यहां आओ बात चीत करें ।
वद भ्रातृजाये ! किमिच्छसि?	कहो भौजाई क्या इच्छा है ?
तव पतिः कीदृशोऽस्ति ?	तेरा पति कैसा है ?
अतीव सुखप्रदो यथा तव ।	अत्यन्त सुख देने वाला है जैसा तेरा ।

SGDF Sri Gangadharan Digital Foundation

मया त्वीदृशः पतिः सुभाग्येन लब्धोस्ति ।

मैंने तो इस प्रकार का पति अच्छे भाग्य से पाया है ।

कदाचिदप्रियं तु न करोति ?

कभी कोई बुराई तो नहीं करता ?

कदापि नहि किन्तु सर्वदा प्रीतिं वर्द्धयति ।

कभी नहीं किन्तु सबदिन प्रीति बढ़ाता है ।

पश्याभ्यां बाल्याऽवस्थायां विवाहः कृतोऽतः सदा दुःखिनौ वर्त्तेते ।

देखो इन दोनों ने बाल्याऽवस्था में विवाह किया है इस से सदा दुःखी रहते हैं ।

यान्यपत्यानि जातानि तान्यपि रुग्णान्यग्रेऽपत्यस्याऽऽशैव नास्ति निर्बलत्वात् ।

जो लड़के हुए वे भी रोगी हैं आगे लड़का होने की आशा ही नहीं है निर्बलता से ।

पश्य तव मम च कीदृशानि पुष्टान्यपत्यानि द्विवर्षानन्तरं जायन्ते ।

देखो तेरे और मेरे कैसे पुष्ट लड़के दो वर्ष के पीछे होते जाते हैं ।

सर्वदा प्रसन्नानि सन्ति वर्द्धन्ते च सुशीलत्वात् ।

सब काल में प्रसन्न और बढ़ते जाते हैं सुशीलता से ।

नह्यस्मिन्संसारेऽनुकूलस्त्रीपतिजन्यसदृशं सुखं किमपि विद्यते ।

इस संसार में अनुकूल स्त्री और पुरुष से होने वाले सुख के सदृश दूसरा सुख कोई नहीं है ।

इदानीं वृद्धाऽवस्था प्राप्ता यौवनं गतं केशाः श्वेता जाताः प्रतिदिनं बलं ह्रसति च ।

इस समय वृद्धावस्था आई जवानी गई बाल सफेद हुए और नित्य बल घटता है ।

SGDF
Sri Gurudev Digital Foundation

स इदानीं गमनागमनमपिकर्त्तुमशक्तो जातः ।

वह इस समय आने जाने को भी असमर्थ हो गया है ।

बुद्धिविपर्य्यासाद्विपरीतं भाषते।

बुद्धि के विपरीत होने से उलटा बोलता है ।

अद्याऽस्य मरणसमय आगत ऊर्ध्वश्वासत्वात् ।

आज इस के मरने का समय आया ऊपर को श्वास के चलने से ।

सोऽद्य मृतः !!

वह आज मर गया !!

नीयतां श्मशानं वेदमन्त्रैर्घृतादिभिर्दह्यताम् ।

लेचलो श्मशान को वेद मन्त्रों करके घी आदि सुगन्ध से जलादो ।

शरीरं भस्मीभूतं जातमतस्तृतीयेह्न्यस्थिसंचयनं कृत्वा पुनस्तन्निमित्तं शोकादिकं किंचिदपि नैव कार्यम् ।

शरीर भस्म हो गया इस से तीसरे दिन हाड़ों को वेदी से इकट्ठे कर उठा के फिर उसके निमित्त शोकादि कुछ भी न करना चाहिये।

त्वं मातापित्रोः सेवां न करोष्यतः कृतघ्नी वर्त्तसेऽतो मातापितृसेवा केनापि नैवत्याज्या ।

तू माता पिता की सेवा नहीं करता इस से कृतघ्नी है इस लिये माता पिता की सेवा का त्याग किसी को कभी न करना चाहिये ।

अथ सायंकालकृत्यप्रकरणम् ॥

इदानीन्तु संध्यासमय आगतः सायंसन्ध्यामुपास्य भोजनं कृत्वा भ्रमणं कुरुत ।

अब तो संध्यासमय आया संध्योपासन और भोजन करके घूमना घामना करो ।

SGDF
Sri Gargeshwari Digital Foundation

अद्य त्वया कियत्कार्यं कृतम् ?	आज तूने कितना काम किया ?
एतावत्कृतमेतावदवशिष्टमस्ति।	इतना किया और इतना शेष है।
अद्य कियांल्लाभो व्ययश्च जातः।	आज कितना लाभ और खर्च हुआ।
पञ्चशतानि मुद्रा लाभः सार्द्धे-द्वे शते व्ययश्च ।	पांच सौ रुपये लाभ और अढ़ाई सौ खर्च हुए ।
इदानीं सामगानं क्रियताम् ।	इस समय सामवेद का गान कीजिये।
वीणादीनि वादित्राण्यानीय-ताम् ।	वीणादिक बाजे लाइये ।
आनीतानि ।	लाये ।
वाद्यताम् ।	बजाइये ।
गीयताम् ।	गाइये ।
कस्य रागस्य समयो वर्त्तते ।	किस राग की वेला है।
षड्जस्य ।	षड्ज की ।
इदानीं तु दशघटिकाप्रमिता रात्र्यागता शयीध्वम् ।	इस समय तो दश घड़ी रात आई सोइये ।
गम्यतां स्वस्वस्थानम् ।	जाइये अपने २ घर को ।
स्वस्वशय्यायां शयनं कर्त्तव्यम्।	अपने २ पलंग पर सोना चाहिये ।
सत्यमेवमेवेश्वरकृपया सुखेन रात्रिर्गच्छेत्प्रभातं भवेत् ।	सत्य है ऐसे ही ईश्वर की कृपा से सुखपूर्वक रात बीते और सुवेरा होवे।

शरीराऽवयवप्रकरणम् ॥

अस्य शिरः स्थूलं वर्त्तते ।	इस का शिर बड़ा है ।
देवदत्तस्य मूर्द्धकेशाःकृष्णा वर्त्तन्ते।	देवदत्त के शिर के बाल काले हैं।

SGDF
Sri Gangeshwari Digital Foundation

मम तु खलु श्वेता जाताः ।	मेरे तो सुपेद हो गये ।
तवापि केशा अर्द्धश्वेताः सन्ति।	तेरे भी बाल आधे सुपेद हैं ।
अस्य ललाटं सुन्दरमस्ति ।	इस का माथा सुन्दर है ।
अयं शिरसा खल्वाटः ।	इस के शिर में बाल नहीं हैं ।
तस्योत्तमभ्रुवौ स्तः ।	उस की अच्छी भौंह हैं ।
श्रोत्रेण शृणोषि न वा ?	कान से सुनता है वा नहीं ?
शृणोमि ।	सुनता हूं ।
अनया स्त्रिया कर्णयोः प्रशस्तान्याभूषणानि धृतानि ।	इस स्त्री ने कानों में अच्छे सुन्दर गहने पहिने हैं ।
किमयं कर्णाभ्यां बधिरोस्ति ?	क्या यह कानों से बहिरा है ?
बधिरस्तु न परन्तु श्रवणे ध्यानं न ददाति ।	बहिरा तो नहीं परन्तु सुनने में ध्यान नहीं देता ।
अयं विशालाक्षः ।	यह अच्छे नेत्र वाला है ।
त्वं चक्षुषा पश्यसि न वा ?	तू आंख से देखता है वा नहीं ?
पश्यामि परन्त्विदानीं मन्ददृष्टिर्जातोऽहमस्मि ।	देखता हूं परन्तु इस समय मन्ददृष्टि अर्थात् थोड़ी दृष्टिवाला होगया हूं ।
इदानीन्ते रक्ते अक्षिणी कथं वर्त्तेते ?	इस समय तेरी आंखें लाल क्यों हैं ?
यतोऽहं शयनादुत्थितः ।	जिस से मैं सोने से उठा हूं ।
स काणो धूर्त्तोऽस्ति ।	वह काना धूर्त्त है ।
द्रष्टव्यमयमन्धः सचक्षुष्कवत् कथं गच्छति ।	देखना चाहिये यह अन्धा आंख वाले के समान कैसे जाता है ।

SGDF
Sri Gargeshwari Digital Foundation

तवाऽक्षिणी कदा नष्टे ?	तेरी आंखें कब नष्ट हुईं ?
यदाऽहं पञ्चवर्षोऽभूवम् ।	जब मैं पांच वर्ष का हुआ था ।
इदानीम्मन्नेत्रे रोगोऽस्ति स कथं निवर्त्स्यति ?	इस समय मेरे नेत्र में रोग है वह कैसे निवृत्त होगा ?
अञ्जनाद्यौषधसेवनेन निवर्त्तिष्यते ।	अञ्जन आदि औषध के सेवन से निवृत्त होगा ।
तस्य नासिकोत्तमास्ति ।	उस की नाक अतिसुन्दर है ।
भवानपि शुकनासिकः ।	आप भी सुग्गे के सी नाक वाले हैं ।
घ्राणेन गन्धं जिघ्रसि न वा ?	नाक से गन्ध सूंघते हो वा नहीं ?
श्लेष्मकफत्वान्मया नासिकया गन्धो न प्रतीयते ।	सरदी कफ होने से मुझ को नासिका से गन्ध की प्रतीति नहीं होती ।
अयं पुरुषः सुकपोलोऽस्ति ।	यह पुरुष अच्छे गाल वाला है ।
अतिस्थूलत्वादस्य नाभिर्गभीरा ।	बहुत मोटा होने से इस की नाभी गहरी है ।
त्वमद्य प्रसन्नमुखो दृश्यसे किमत्र कारणम् ?	तू आज प्रसन्नमुख दिखाई देता है इस में क्या कारण है ?
अयं सदाह्लादितवदनो विद्यते ।	यह सर्बदिन प्रसन्नमुख बना रहता है ।
अस्यौष्ठौ श्रेष्ठौ वर्त्तेते ।	इस के ओष्ठ बहुत अच्छे हैं ।
अयँल्लम्बोष्ठत्वाद्भयङ्करोऽस्ति ।	यह लम्बे ओष्ठ वाला है इस से भयङ्कर है ।
सर्वैर्जिह्वया स्वादो गृह्यते ।	सबलोग जीभ से स्वाद लिया करते हैं ।
वाचा सत्यं प्रियं मधुरं सदैव वाच्यम् ।	वाणी से सत्य प्रिय और मधुर सब दिन बोलना चाहिये ।

SGDF Digital Foundation

नैव केनचित्खल्वनृतादिकं वक्तव्यम् ।	कभी किसी को झूठ बोलना नहीं चाहिये ।
अयं सुदन् वर्त्तते ।	यह अच्छे दांतों वाला है ।
तव दन्ता दृढाः सन्ति वा चलिताः?	तेरे दांत दृढ़ हैं वा चल गये हैं ?
मम दृढा अस्य तु त्रुटिताः सन्ति ।	मेरे दृढ़ हैं अर्थात् निश्चल हैं और इस के तो टूट गये हैं ।
मन्मुख एकोपि दन्तो नास्त्यतः कष्टेन भोजनादिकं करोमि ।	मेरे मुख में एक भी दांत नहीं है इस से क्लेश से भोजन करता हूं ।
अस्य श्मश्रूणि लम्बीभूतानि सन्ति ।	इस को मोंछें लम्बी हैं ।
तव चिबुकस्योपरि केशा न्यूनाः सन्ति ।	तेरे डाढ़ी के ऊपर बाल थोड़े हैं ।
त्वया कण्ठ इदं किमर्थं बद्धम्?	तूने गले में यह किसलिये बांधा है ?
अस्योरू विस्तीर्णौ स्तः ।	इस की जंघा अच्छी तैयार हैं ।
त्वया हृदये किं लिप्तम् ?	तू ने छाती में क्या लगाया है ?
इदानीं हेमन्तोऽस्त्यतः कुङ्कुमकस्तूर्यौ लिप्ते ।	इस समय हेमन्त ऋतु है इस से केसर और कस्तूरी लेपन किये हैं ।
तथा हृच्छूलनिवारणायौषधम् ।	वैसे ही हृदयशूल निवारण के लिये औषध ।
माणवकः स्तनाद्दुग्धं पिबति ।	लड़का स्तन से दूध पीता है ।
पश्य देवदत्तोऽयं लम्बोदरो वर्त्तते ।	देख देवदत्त यह बड़े पेट वाला अर्थात् तुन्दीला है ।

SGDF
Sri Gargeshwari Digital Foundation

अयन्तु खलु क्षामोदरः ।	यह तो छोटे पेट वाला है ।
तव पृष्ठे किं लग्नमस्ति ?	तेरी पीठ में क्या लगा है ?
किं स्कन्धाभ्यां भारं वहसि ?	क्या तू कन्धों से भार उठाता है ?
पश्याऽस्य क्षत्रियस्य बाह्वोर्बलं येन स्वभुजबलप्रतापेन राज्यं वर्द्धितम् ।	देख इस क्षत्रियका बाहुबल जिसने अपने बाहुबल से राज्य बढ़ाया है।
मनुष्येण हस्ताभ्यामुत्तमानि धर्मकार्याणि सेव्यानि नैव कदाचिदधर्म्याणि ।	मनुष्य को चाहिये कि हाथों से उत्तम धर्मयुक्त कर्म करे न कभी अधर्मयुक्त कर्मों को ।
अस्य करपृष्ठे करतले च घृतं लग्नमस्ति ।	इस के हाथ की पीठ और तले में घी लगा है ।
मुष्टिबन्धने सत्येकत्राऽङ्गुष्ठ एकत्र पञ्चाङ्गुलयो भवन्ति ।	मूंठी बांधने में एक ओर अंगूठा और एक ओर पांच अंगुली होती हैं।
शरीरस्य मध्यभागे नाभिः पुरतः पश्चिमतः कटिः कथ्यते ।	शरीर के आगे बीचभाग को नाभी और पीछे के भाग को पीठ कहते हैं।
अयं मल्लः स्थूलोरुः ।	यह पहलवान मोटी जंघा वाला है।
माणवको जानुभ्यां गच्छति ।	लड़का घोंटू के बल से चलता है।
अद्यातिगमनेन जङ्घे पीडितेऽस्तः ।	आज बहुत चलने से जांघें दूखती हैं।
अहं पद्भ्यां ह्यो ग्राममगमम्।	मैं पैदल कल गांव को गया था ।
अस्य शरीरे दीर्घाणि लोमानि सन्ति ।	इस के शरीर में बड़े २ रोम हैं ।

SGDF
Sri Gargeshwari Digital Foundation

तव शरीरे न्यूनानि सन्ति ।
अस्य शरीरचर्म श्लक्ष्णं वर्त्तते।
पश्यास्य नखा आरक्ताः सन्ति।
अयं दक्षिणेन हस्तेन भोजनं वामेन जलं पिबति ।
इदानीं त्वया श्रमः कृतोऽस्त्यतो धमनी शीघ्रं चलति ।
अधुना तु ममान्तस्त्वग् दह्यते ऽस्थिषु पीडाऽपि वर्त्तते ।

और तेरे शरीर में थोड़े रोम हैं।
इसके शरीर का चमड़ा चिकना है।
देख इसके नख कुछ २ लाल हैं।
यह दहिने हाथ से भोजन और बांये से जल पीता है।
इस समय तूने श्रम किया है इस से नाड़ी शीघ्र चलती है।
इस समय मेरे भीतर की त्वचा जलती और हाडों में पीड़ा भी है।

अथ राजसभा प्रकरणम् ॥

तिष्ठ भो देवदत्त त्वया सह गच्छामि राजसभाम् ।
सभा शब्दस्य कः पदार्थः ?
या सत्यासत्यनिर्णयाय प्रकाशयुक्ता वर्त्तेत ।
तत्र कति सभासदः सन्ति ?
सहस्रम् ।
या मम ग्रामे सभास्ति तत्र खलु पञ्चशतानि सभासदः सन्ति ।
इदानीं सभायां कस्य विषयस्योपरि विचारः कर्त्तव्यः ?
युद्धस्य ।

खड़ा रह देवदत्त तेरे साथ मैं भी चलता हूं राजा की सभा को ।
सभा शब्द का क्या अर्थ है ?
जो सच झूठ का निर्णय करने के लिये प्रकाश से सहित हो ।
वहां कितने सभासद् हैं ?
हजार ।
जो मेरे ग्राम में सभा है उस में तो पांचसौ सभासद् हैं ।
इस समय सभा में किस विषय पर विचार करना चाहिये ?
युद्ध अर्थात् लड़ाई का ।

SGDF
Sri Gargeshwari Digital Foundation

तेन सह युद्धं कर्त्तव्यं न वा ?

उस के साथ युद्ध करना चाहिये वा नहीं ?

यदि कर्त्तव्यं तर्हि कथम् ?

यदि करना चाहिये तो कैसे ?

यदि स धर्म्मात्मा तदा तु न कर्त्तव्यं ।

यदि वह धर्मात्मा हो तब तो युद्ध करना योग्य नहीं ।

पापिष्ठश्चेत्तर्हि तेन सह योद्धव्यमेव ।

और जो पापी हो तो उस के साथ युद्ध करना ही चाहिये ।

सोऽन्यायेन प्रजां भृशं पीडयत्यतो महापापिष्ठः ।

वह अन्याय से प्रजा को निरन्तर पीड़ा देता है इस कारण से बड़ा पापी है ।

एवं चेत्तर्हि शस्त्रास्त्रप्रक्षेपयुद्धकुशला बलिष्ठा कोशधान्यादिसामग्रीसहिता सेना युद्धाय प्रेषणीया ।

यदि ऐसा है तो शस्त्र अस्त्र चलाने में और युद्ध में कुशल बड़ी लड़ने वाली खजाना और अन्नादि सामग्री सहित सेना युद्ध के लिये भेजना चाहिये ।

सत्यमेवात्र वयं सर्वे सम्मतिं दद्मः ।

सच ही है इस में हम सब लोग सम्मति देते हैं ।

इदानीं कस्यां दिशि कैः सह युद्धं प्रवर्त्तते ?

इस समय किस दिशा में कौन २ के साथ युद्ध होता है ?

पश्चिमायां दिशि यवनैः सह हरिवर्षस्थानाम् ।

पश्चिम दिशा में मुसलमानों का और [हरिवर्ष] अर्थात् यूरोपियन् अंग्रेज लोगों का ।

पराजिता अपि यवना अद्याप्युपद्रवं न त्यजन्ति ।

हारे हुए भी मुसलमान लोग अब भी उपद्रव अर्थात् धूम धाम नहीं छोड़ते ।

SGDF
Sri Gurugobind Digital Foundation

अयं खलु पशुपक्षिणामपि स्वभावोस्ति यदा कश्चित्तद्गृहादिकं ग्रहीतुमिच्छेत् तदा यथाशक्ति युध्यन्त एव ।

यह तो पशुपक्षियों का भी स्वभाव है कि जब कोई उन के घर आदि को छीन लेने की इच्छा करता है तब यथाशक्ति युद्ध करते अर्थात् लड़ते ही हैं ।

अथ ग्राम्यपशु–प्रकरणम् ॥

भो गोपाल गा वने चारय ।

हे अहिर गौओं को बन में चरा ।

तत्र या धेनवस्ताभ्योऽर्द्धं दुग्धं त्वया दुग्ध्वा स्वामिभ्यो देयमर्द्धं च वत्सेभ्यः पाययितव्यम् ।

वहां जो नई व्यानी गौएं उन से आधा दूध तूने दुह कर मालिक को देना और आधा बछड़ों को पिलाना चाहिये ।

एतौ वृषभौ रथे योक्तुं योग्यौ स्त इमौ हले खलु ।

ये दोनों बैल गाड़ी में वा रथ में जोतने के योग्य हैं ये दोनों हलों में ।

पश्येमाः स्थूला महिष्यो वने चरन्ति ।

देखिये ये मोटी भैंसें बन में चरती हैं ।

आगच्छ भो द्रष्टव्यम्माहिषाणां युद्धं परस्परं कीदृशं भवति ।

आओ जी देखने योग्य भैंसों का युद्ध किस प्रकार आपस में हो रहा है ।

अस्य राज्ञो बहव उत्तमा अश्वाः सन्ति ।

इस राजा के बहुत उत्तम घोड़े हैं ।

किमियं राज्ञः सतुरङ्गा सेना गच्छति ?

क्या यह राजा की घोड़ों सहित सेना जा रही है ?

श्रोतव्यं हरयः कीदृशं ह्रेषन्ते ?

सुनिये घोड़े किस प्रकार हिनहिनाते हैं ?

SGDF
Sri Gangeshwari Digital Foundation

यथा हस्तिनो स्थूलाः सन्ति तथा हस्तिन्योऽपि ।	जैसे हाथी मोटे होते हैं वैसी हथिनी भी ।
नागास्समं गच्छन्ति ?	हाथी बराबर चाल से चलते हैं ?
शृणु करिणः कीदृशं बृंहन्ति ।	सुन हाथी कैसे चिंघारते हैं ।
पश्येमे गजोपरि स्थित्वा गच्छन्ति ।	देख ये हाथी पर बैठ के जाते हैं ।
अस्य राज्ञः कतीभास्सन्ति ?	इस राजा के कितने हांथी हैं ?
पञ्च सहस्राणि ।	पांच हजार ।
रात्रौ श्वानो बुक्कन्ति ?	रात में कुत्ते भूंसते हैं ।
प्रातः कुक्कुटाः संप्रवदन्ति ।	सुबेरे मुरगे बोलते हैं ।
मार्जारो मूषकानत्ति ।	बिल्ला मूसें को खाता है ।
कुलालस्य गर्द्दभा अतिस्थूलाः सन्ति ।	कुम्हार के गदहे अत्यन्त मोटे हैं ।
शृणु लम्बकर्णाःरासभा रासन्ते ।	सुन लम्बे कानों वाले गदहे बोलते हैं ।
ग्राम्यसूकराः पुरीषं भक्षयित्वा भूमिं शुन्धन्ति ।	गांव के सुवर मैला खाके भूमि को शुद्ध करते हैं ।
उष्ट्रा भारं वहन्ति ।	ऊंट बोझा ढोते हैं ।
अजाविपालोऽजा अवीर्दोग्धि ।	गड़रिया बकरी और भेड़ों को दुहता है ।
पशवोऽपुर्नद्यां जलम् ।	पशु नदी में जल पीते हुए ।
रक्तमुखो बानरोऽतिदुष्टो भवति कृष्णमुखस्तु श्रेष्ठः खलु ।	लालमुख का बन्दर बड़ा दुष्ट और काले मुह का लंगूर तो अच्छा होता है ।

SGDF Sri Gurgeshwari Digital Foundation

वानरी मृतकमपि बालकं न त्यजति ।	बंदरी मरेहुए भी बच्चे को नहीं छोड़ती ।
गोपालेनगावोदुग्धाःपयोनवा?	ग्वाले ने गौओं से दूध दुहा वा नहीं?
कपिलाया गोर्मधुरं पयोभवति ।	पीली कपिला गौ का दूध मीठा होता है ।
अयं वृषभः कियतामूल्येनक्रीतः?	यह बैल कितनेमोल से खरीदा है?
शतेन रूप्यैः ।	सौ रुपयों से ।
कतिभिः पणैः प्रस्थंपयोमिलति?	कितने पैसे सेर दूध मिलता है ?
द्वाभ्यां पणाभ्याम् ।	दो पैसों से ।
पश्य देवदत्त वानराः कथमुत्-प्लवन्ते ।	देख देवदत्त बंदर कैसे कूदते हैं ।
अयं महाहनुत्वाद्धनुमान्वर्त्तते ।	यह बन्दर बड़ी थुन्डीवाला होने से हनुमान् है ।

अथ ग्रामस्थपक्षि-प्रकरणम् ॥

एताभ्यां चटकाभ्यां प्रासादे नीडं रचितम् ।	इन चिड़ियों ने अटारी पर घोंसला बनाया है ।
अत्राण्डानि धृतानि ।	यहां अंडे धरे हैं ।
इदानींतु चाटकैराअपिजाताः ।	अब तो इन के बच्चे भी होगये हैं ।
पश्य विष्णुमित्रकुक्कुटयोर्युद्धम् ।	देख विष्णुमित्र मुरगों की लड़ाई ।
कुक्कुटी स्वान्यण्डानि सेवते ।	मुरगी अपने अंडों को सेवती है ।
पश्य शुकानां समूहं योविरुवन्नुड्डीयते ।	देख सुग्गों के झुन्ड को जो चचौंता हुआ उड़ा जाता है ।

SGDF
Sri Gargeshwari Digital Foundation

रात्रौ काका न वाश्यन्ते ।	रात में कौवे नहीं बोलते हैं ।
अरे भृत्योड्डायय ध्वांक्षमनेन पातव्यजलपात्रे चञ्चुं निक्षिप्य जलं विनाशितम् ।	अरे नौकर कौवे को उड़ादे उस ने पीने के जल के बरतन में चोंच डाल कर जल नष्ट कर दिया ।
वायसेन बालकहस्ताद्रोटिका हृता ।	कौए ने लड़के के हांथ से रोटी लेली ।
पश्य कीदृशं काकोलूकिका युद्धं प्रवर्त्तते ।	देख किस प्रकारकी कौवे और उल्लुओं की लड़ाई होरही है ।
अनेन शुकहंसतित्तिरिकपोताः पालिताः ।	इसने सुग्गा हंस तीतर और कबूतर पाले हैं ।

अथ वन्यपशु-प्रकरणम् ॥

वने रात्रौ सिंहा गर्ज्जन्ति ।	वन में रात के समय सिंह गर्जते हैं ।
शार्दूलं दृष्ट्वा सिंहा निलीयन्ते ।	शार्दूल को देख कर सिंह छिप जाते हैं ।
ह्यः सिंहो गामहन् ।	कल सिंह ने गौ को मारडाला ।
परश्वो विक्रमवर्मणा सिंहोहतः ।	परसों विक्रम वर्मा क्षत्रिय ने सिंह मारा ।
द्रष्टव्यं हस्तिसिंहरणम् ।	देख हाथी और सिंह की लड़ाई ।
जङ्गले हस्तियूथाः परिभ्रमन्ति ।	जंगल में हाथी के झुंड घूमते हैं ।
इदानीमेव वृकेण मृगो गृहीतः ।	अभी भेडिया ने हरिन पकड़लिया ।
अयं कुक्कुरो बलवाननेन सिंहेन सहाप्याजिः कृता ।	यह कुत्ता बड़ा बलवान् है इस ने सिंह के साथ भी लड़ाई की ।

SGDF Sri Gangadhar Digital Foundation

पश्य सिंहवराहसंग्रामम् । देख सिंह और शूकर का युद्ध ।

शूकरा इक्षुक्षेत्राणि भक्षयित्वा विनाशयन्ति । शूकर ऊख के खेतों को खाकर नष्ट कर देते हैं ।

पश्य वेगेन धावतो मृगान् । देख वेग से दौड़ते हुए हिरनों को ।

अयं रुरुर्वृषभवत्स्थूलोस्ति । यह काला रोज बैल के समान मोटा है ।

यो निलयादुत्प्लुत्य धावति स शशस्त्वया दृष्टो न वा ? जो भांटी से लपटझपट के दौड़ता है उस खरहा को तूने देखा है वा नहीं?

बहून्दृष्टवान् । बहुतों को देखा है ।

कदाचिद्भालवोऽपिदृष्टा न वा ? कभी रीछ भी देखे हैं वा नहीं ?

एकदा ऋच्छेन सार्कं मम युद्धं जातम् । एक समय रीछ के साथ मेरी लड़ाई भी हुई थी ।

रात्रौ शृगालाः क्रोशन्ति । रात्रि में सियाल रोते हैं ।

कदाचित्खड्गोपि दृष्टो न वा ? कभी गैंडा भी देखा वा नहीं ?

य आरण्या महिषा बलवन्तो भवन्तितान्कदाचिद्दृष्टवान्नवा ? जो अरणा भैंसा बलवान् होते हैं उन को कभी देखा वा नहीं ॥

अथ वनस्थपक्षि-प्रकरणम् ॥

कदाचित्सारसावप्युड्डीयमानौ क्रीडन्तौ महाशब्दं कुरुतः । कभी सारस पक्षी भी उड़ते और क्रीडा करते हुए बड़े शब्द करते हैं ।

श्येनेनातिवेगेन वर्त्तिका हता । बाज ने बड़े वेग से बटेर मारी ।

शृणु तित्तिरयः कीदृशं मधुरं नदन्ति । सुन तितिर किस प्रकार मधुर बोलते हैं ।

SGDF
Sri Gurgeshwari Digital Foundation

वसन्ते पिकाः प्रियं कूजन्ति ।
वसन्त ऋतु में कोयल प्रिय शब्द करते हैं ।

काककोकिलवद्दुर्वचाः सुवाक्च मनुष्यो भवति ।
कौवे और कोयल के सदृश दुष्ट और अच्छा बोलने वाला मनुष्य होता है ।

अयं देवदत्तो हंसगतिं गच्छति ।
यह देवदत्त हंस के समान चलता है ।

पश्येमे मयूरा नृत्यन्ति ।
देखिये ये मोर नाचते हैं ।

उलूका रात्रौ विचरन्ति ।
उल्लू रात को विचरते हैं ।

पश्य वकः सरस्सु पाखण्डिजनवन् मत्स्यान् हन्तुं कथं ध्यायति ?
देख बकुला तलाओं में पाखण्डी मनुष्य के तुल्य मछली मारने को किस प्रकार ध्यान करता है ?

बलाका अप्येवमेव जल जन्तून् घ्नन्ति ।
बलाका भी इसी प्रकार जलजन्तुओं को मारती हैं ।

पश्य कथञ्चकोरा धावन्ति ?
देख किस प्रकार चकोर दौड़ते हैं ?

येऽत्यूर्ध्वमाकाशे गत्वा मांसाय निपतन्ति ते गृध्रास्त्वया दृष्टा न वा ?
जो बहुत ऊपर आकाश में जाकर मांस के लिये गिरते हैं वे गीध तूने देखे हैं वा नहीं ?

मेनका मनुष्यवद्वदन्ति ।
मैना मनुष्य के समान बोलती हैं ।

चिल्लिका माणवकहस्ताद्रोटिकां छित्वोड्डीयते ।
चील्ह लड़के के हाथ से रोटी छीन कर उड़ जाती है ।

अथतिर्यक्जन्तु-प्रकरणम् ॥

सर्पाः शीघ्रं सर्पन्ति ।
सर्प जल्दी सरकते हैं ।

अयं कृष्णः फणीमहाविषधारी ।
यह काला सांप बड़ा विषवाला है ।

SGDF
Sri Gurudev Digital Foundation

भवता कदाचिदजगरोऽपिदृष्टो नवा ?	आप ने कभी अजगर भी देखा है वा नहीं ?
पश्याहिनकुलस्यसंग्रामोवर्त्तते।	देख सांप और नेउरे का युद्ध होता है।
स वृश्चिकेन दष्टो रोदिति ।	वह बिच्छू से काटा गया रोता है ।
इयं गोधा स्थूलास्ति ।	यह गोह मोटी है।
मूषका बिले शेरते ।	मूसे बिल में सोते हैं ।
मक्षिकां भक्षयित्वा वमनं प्रजायते ।	मक्खी खा कर वमन हो जाता है ।
अत्र वासः कर्तव्यो निर्मक्षिकं वर्तते ।	यहां बास करना चाहिये मक्खी एक भी नहीं है ।
मधुमक्षिकादंशनेन शोथः प्रजायते ।	मधु मक्खियों के काटने से सूजन हो जाती है ।
भ्रमरा गुञ्जन्तः पुष्पेभ्यो गंधं गृह्णन्ति ।	भौंरे गुंजते हुए फूलों से सुगंधि ग्रहण करते हैं ।

अथजलजन्तु–प्रकरणम् ॥

तिमिङ्गिला मत्स्याः समुद्रे भवन्ति ।	तिमिङ्गिलमच्छी समुद्र मेंहोती हैं।
रोहित् सिंहतुण्डराजीवाश्च पुष्करिणी नदीतडागसमुद्रेषु निवसन्ति ।	रोहू सिंहतुण्ड और राजीव इन नामों की मछलियां पुखरिया नदी तलाव और समुद्र में वास करती हैं।
मकरः पशूनपिगृहीत्वानिगलति	मगर पशुओं को भी पकड़ कर निकल जाता है।

SGDF
Sri Gurgeshwari Digital Foundation

नक्राग्राहाअपिमहान्तोभवंति ।	नाके तथा घरियार भीबड़े २ होतेहैं
कूर्म्माः स्वाङ्गानि संकोच्य प्रसारयन्ति ।	कछुए अपने अङ्गों को समेट कर फैलाते हैं ।
वर्षासुमण्डूकाः शब्दयन्ति ।	बर्षा में मेंड़के बोलते हैं ।
जलमनुष्या अप्सु निमज्य तट आसते ।	जल के मनुष्य पानी में डूब कर तीर पर बैठते हैं ।

अथवृक्षवनस्पति-प्रकरणम् ॥

पिप्पलाः फलिता नवा ?	पीपल फले हैं वा नहीं ?
इमे बटाः सुच्छायास्संति ।	ये बड़ अच्छीछायावाले हैं ।
पश्येमउदुम्बराः सफलावर्त्तंते ।	देख ये गूलर फलयुक्त होरहे हैं ।
इमे विल्वाःस्थूलफलास्सन्ति ।	ये बेल बड़े फलवाले हैं ।
ममोद्यान आम्राः पुष्पिता : फलिताः सन्ति ।	मेरे बगीचे में आम फूले फले हैं ।
इदानींपक्वफलाअपिवर्त्तंते ।	इस काल में पक्के फलवाले भी हैं ।
अस्याऽस्य मधुराणि रसवंति फलानि भवंति ।	इस आम के मीठे और रसीले फल होते हैं ।
तस्य त्वम्लानि भवन्ति ।	उसके तो खट्टे होते हैं ।
पनसस्यमहान्तिफलानिभवंति ।	कटहर के बड़े २ फल होते हैं ।
शिंशपायाः काष्ठानि दृढानि संति शालस्य दीर्घाणि च ।	सीसों की दृढ़ कठिन होती और साखू की लकड़ी लंबी होती हैं ।
अस्य बर्बुरस्य कण्टकास्तीक्ष्णा भवन्ति	इस बबुल के कांटे तीखी अणी वाले होते हैं ।

SGDF

वदरीणांतुमधुराम्लानिफलानि कण्टकाश्च कुटिला भवन्ति । — बेरियों के तो मीठेखट्टे फल और इन के कांटे टेढे होते हैं ।

कटुको निम्बो ज्वरं निहन्ति । — कडुआ नीब ज्वर का नाश करदेता है।

मातुलुङ्गकफलरसंसूपेनिःक्षिप्य भोक्तव्यम् । — नीबू का रस दाल में डाल कर खानेयोग्य है ।

मम वाटिकायां दाडिमफला-न्यत्युत्तमानि जायन्ते । — मेरे बगीचे में अनार बहुत अच्छे होते हैं ।

नागरङ्गफलान्यानय । — नारंगी के फलों को ला ।

वसन्ते पलाशाः पुष्प्यन्ति । — बसंत ऋतु मे ढांक फूलते हैं ।

उष्ट्राः शमीवृक्षपत्रफलानि भुञ्जते । — ऊंट शमी अर्थात् खींजड़ (छ्योंकर) वृक्ष के पत्ते और फलों को खातेहैं ।

अथौषध–प्रकरणम् ॥

कदलीफलानि पक्वानि न वा? — केला के फल पक्के वा नहीं ?

तण्डुलादयस्तु वैश्यप्रकरणेलिखितास्तत्र द्रष्टव्याः । — चावल आदि तो बनियों के प्रकरण में लिखे हैं वहां देखलेना ।

विषनिवारणायाऽपामार्गमानय । — बिष निवारने के लिये चिंचिडा ला ।

निर्गुण्ड्याःपत्राण्यानेयानि । — निर्गुण्डी के पत्ते लाने चाहिये ।

लज्जावत्याः किं जायते ? — लज्जावन्ती का क्या होता है ?

गुडूची ज्वरं निवारयति । — गुडुच ज्वर को शान्त करती है ।

शंखावलीं दुग्धे पाचयित्त्वापिबेत् । — शंखावली को दूध में पकाके पिये ।

यथर्त्तुयोगं हरीतकी सेविता सर्वान्रोगान्निवारयति । — जिस प्रकार से ऋतु २ में हरड़ेका सेवन करना योग्य है वैसे सेवीहुई हरड़ सब रोगों को छुड़ा देती है।

SGDF
Sri Gangadhar Digital Foundation

शुण्ठीमरीचपिप्पलीभिः कफ-वातरोगौ निहन्तव्यौ ।	सोंठ मिर्च और पीपर से कफ और बात रोगों का नाश करना चाहिये ।
योऽश्वगन्धं दुग्धे पाचयित्वा पिबाति स पुष्टो जायते ।	जो असगन्ध को दूध में पका के पीता है वह पुष्ट होता है ।
इमानि कन्दानि भोक्तुमर्हाणि वर्त्तन्ते ।	ये कन्द खाने के योग्य हैं ।
एतेषान्तुशाकमपिश्रेष्ठंजायते ।	इन कन्दों का तो शाक भी अच्छा होता है ।
अस्यां वाटिकायां गुल्मलताः प्रशंसनीयाः सन्ति ।	इस बगीचे में गुच्छा और लताप्रतान प्रशंसा के योग्य अर्थात् अच्छे हैं ।

अथात्मीय-प्रकरणम् ॥

तवज्येष्ठोबन्धुर्भगिनीचकास्ति ?	तेरे बड़ा भाई और बहिन कौन हैं?
देवदत्तस्सुशीला च ।	देवदत्त और सुशीला ।
भोबन्धोऽहं पाठाय व्रजामि ।	हे भाई मैं पढ़ने को जाताहूं ।
गच्छ प्रिय पूर्णां विद्यां कृत्वा-ऽऽगन्तव्यम् ।	जा प्यारे पूरी विद्या करके आना ।
भवतःकन्याअद्यश्वः किंपठन्ति?	आप की बेटियां आज कल क्या पढ़ती हैं ?
वर्णोच्चारणशिक्षादिकं दर्शन-शास्त्राणि चाधीत्येदानीं धर्म पाक शिल्प गणित विद्या अधीयते ।	वर्णोच्चारण शिक्षादिक तथा न्याय आदि शास्त्र पढ़ कर अब धर्म,पाक, शिल्प और गणितविद्या पढ़ती हैं।

SGDF
Sri Gangeshwari Digital Foundation

भवज्जेष्ठया किं किमधीत्येदानीं किं क्रियते ?	आप की बड़ी बहिन क्या २ पढ़ अब क्या करती है ?
वर्णज्ञानमारभ्य वेदपर्य्यन्ताः सर्वा विद्या विदित्वेदानीं बालिकाः पाठयति ।	अक्षराऽभ्यास से लेके वेद तक सब पूरी विद्या पढ़ के अब कन्याओं को पढ़ाया करती है ।
तया विवाहः कृतो न वा ?	उस ने विवाह किया वा नहीं ?
इदानीन्तु न कृतः परन्तु वरं परीक्ष्य स्वयंवरं कर्त्तुमिच्छति ।	अभी तो नहीं किया परंतु वर की परीक्षा करके स्वयंवर करने की इच्छा करती है ।
यदा कश्चित्स्वतुल्यः पुरुषो मेलिष्यतितदाविवाहंकरिष्यति ।	जब कोई अपने सदृश पति मिले गा तब विवाह करेगी ।
तव मित्रैरधीतं न वा ?	तेरे मित्रलोगों ने पढ़ा है वा नहीं ?
सर्व एव विद्वांसो वर्त्तन्ते यथाऽहं तथैव तेऽपिसमानस्वभावेषु मैत्र्यास्सम्भवात् ।	सब ही विद्वान् हैं जैसा मैं हूं वैसे वे भी हैं क्योंकि तुल्यस्वभाव वालों में मित्रता का सम्भव है ।
तव पितृव्यः किं करोति ?	तेरा चाचा क्या करता है ?
राज्यव्यवस्थाम् ।	राजा का कारबार ।
इमे किं तव मातुलादयः ?	ये क्या तेरे मामा आदि हैं ?
वाढमयं मम मातुल इयं पितृष्वसेयं मातृष्वसेयं गुरुपत्न्ययं च गुरुः ।	हैं ही यह मेरा मामा यह बाप की बहिन बुआ यह माता की बहिन मौसी यह गुरु की स्त्री और यह गुरु है ।
इदानीमेते कस्मै प्रयोजनायैकत्र मिलिताः ?	इस समय ये सब किस लिये मिल कर इकट्ठे हुए हैं ?

SGDF
Sri Gargeshwari Digital Foundation

मया सत्काराया ऽऽहूताः सन्त आगताः ।	मुझ से सत्कार के अर्थ बुलाये हुए आये हैं ।
इमे मे मातामहीश्वशुरश्याालादयः सन्ति ।	ये मेरे नानी ससुर और साले आदि हैं ।
इमे मम मित्रस्य स्त्रीभगिनीदुहितृजामातरः सन्ति ।	ये मेरे मित्र की स्त्री बहिन लड़की और जमाई हैं ।
इमौ मम पितृव्यस्य श्याल दौहित्रौ स्तः ।	ये मेरे मामा और भानेज हैं ।

अथसामन्त-प्रकरणम् ॥

त्वद्गृहनिकटे के के निवसन्ति ।	तेरे घर के पास कौन२ रहते हैं ।
ब्राह्मणक्षत्रियविट्शूद्राः ।	ब्राह्मण क्षत्रिय बनिये और शूद्र ।
इमे राजसमीपनिवासिनः ।	ये राजा के समीप रहने वाले हैं ।

अथ कारु-प्रकरणम् ॥

भोस्तक्षंस्त्वया नौविमानरथशकटहलादीनि निर्माय तत्र प्रशस्तानि कलाकीलकशलाकादीनि संयोज्य दातव्यानि ।	हे बढ़ई तुझको नावें, बिमान, रथ, गाड़ी, और हल आदि रच के उन में अत्युत्तम कलायन्त्र कील कांटे आदि संयुक्त कर के देने चाहिये ।
इदं काष्ठं छित्त्वा पर्य्यङ्कं रचय ।	इस लकड़ी को काट के पलंग बना ।
अस्मात्कपाटाः सम्पादनीयाः ।	इस से किवाडों को बना ।
इमं वृक्षं किमर्थं छिनत्सि ?	इस वृक्ष को किस लिये काटता है ?
मुषलोलूखलयोर्निर्माणाय ।	मूसल और उखरी बनाने के लिये ।

SGDF Sri Gurudev Digital Foundation

अथायस्कार-प्रकरणम् ॥

भो अयस्कार त्वयाऽस्यायसो वाणासिशक्तितोमरमुद्गरशतघ्नीभुशुण्ड्यो निर्मातव्याः ।	हे लोहकार तुझ को इस लोहे के बाण, तलवार, बरछी तोमर, मुद्गर, बंदूक, और तोप बना देने चाहिये ।
एतस्य क्षुरादीनि च ।	इस के छुरे आदि ।
इमौ कलशकटाहौ त्वया विक्रीयेते न वा ?	ये घड़ा और कड़ाही तुम बेचते हो वा नहीं ?
विक्रीणामि ।	बेंचता हूं ।
एतान् कीलकण्टकान् किमर्थान् रचयसि ?	इन कील कांटों को किस लिये बनाता है ?
विक्रयणाय ।	बेचने के लिये ।

सुवर्णकार-प्रकरणम् ॥

त्वया सुवर्णादिकं नैव चोर्यम् ।	तूं सोना आदि मत चोराना ।
आभूषणान्युत्तमानि निर्मिमीष्व ।	गहने अच्छे सुन्दर बना ।
अस्य हारस्य कियन्मूल्यमस्ति?	इस हार का कितना मोल है ?
पञ्च सहस्राणि राजत्यो मुद्राः ।	पांच हजाररुपये ।
इमौ कुण्डलौ त्वया श्रेष्ठौ रचितौ वलयौ तु न प्रशस्तौ ।	ये कुण्डल तो तूने अच्छे बनाए परन्तु कड़े तो बिगाड़ दिये ।
एतान्यंगुलीयकानिमुक्ताप्रवालहीरकनीलमणिजटितानि सम्पादय ।	ये अंगूठियां मोती, मूंगा, हीरा और नीलमणि सेजड़ी हुई बना ।

SGDF
Sri Gargeshwari Digital Foundation

एतेनालङ्कारा अत्युत्तमा रच्यन्ते ।	इससे गहने बहुत अच्छे बनाये जाते हैं।
नासिकाभूषणं सद्यो निष्पादय ।	नथुनी शीघ्र बना दे ।
इदं मुकुटं केन रचितम् ।	यह मुकुट किस ने बनाया ।
शिवप्रतापेन ।	शिवप्रताप ने ।
अस्य सुवर्णस्य कटककङ्कणनूपुरान् निर्माय सद्यो देहि ।	इस सोने के कड़ा कंकणी वा कंगना और बिछिया बना के शीघ्र दे ।

अथ कुलाल-प्रकरणम् ॥

भो कुलाल कुम्भशरावमृद्गवकान्निर्मिमीष्व घटं देह्यनेन जलमानेष्यामि ।	अरे कुम्हार घड़ा सरवा और मट्टी की गौओं को बना और घड़ा दे जल लाऊंगा ।

अथ तंतुवाय-प्रकरणम् ॥

भोस्तन्तुवाय अस्य सूत्रस्य पटशाटयुष्णीषाणि वय ।	ओ कोरी इस सूत का पटका साड़ी और पगड़ियां बुन ।

अथसूचीकार-प्रकरणम् ॥

भोः सूच्या किं सीव्यसि ?	ओ सूई से क्या सींता है ?
शिरोंगरक्षणाधोवस्त्राणि सीव्यामि ।	टोपी अंगरखा और पाजामा सीता हूं ।

अथ मिश्रित-प्रकरणम् ॥

भोः कारुक कटं वय ।	अरे चटाई वाला चटाई बुन ।
इमे व्याधा मृगादीन्पशून्घ्नन्ति।	ये बहेलिये हरिन आदि पशुओं को मारते हैं ।

SGDF
Sri Gangeshwari Digital Foundation

किराता वने निवसन्ति ।	किरात अर्थात् भील लोग वन में रहते हैं ।
सकमलानिसरांसिकुत्रसन्ति ?	कमल वाले तलाव कहां हैं ?
इमे तड़ागा ग्रीष्मे शुष्यन्ति ।	ये सब तलाव गरमी में सूख जातेहैं।
कूपाज्जलमानय ।	तू कूए से जल ला ।
अद्य वाप्यां स्नातव्यम् ।	आज बावड़ी में नहाना चाहिये ।
रंजकेन शतघ्नीभुशुण्ड्याद्यश्चलन्ति ।	बारूद से बंदूक और तोपेंआदि चलती हैं ।
अयं कम्बलस्त्वया कस्माद् गृहीतः कस्मै प्रयोजनाय ?	यह कम्बल तूने किससे लिया और किस प्रयोजन के लिये ?
कश्मीराच्छीतनिवारणाय ।	कश्मीर से जाडा छुडाने के लिये ।
पश्य माणवकाः क्रीडन्ति ।	देख लडके खेलते हैं ।
अस्मिन्गृहे स्त्रस्तराणि श्रेष्ठानि सन्ति ।	इस घर में बिछौने अच्छे हैं ।
इमे चोराः पलायन्ते ।	ये चोर लोग भागे जातेहैं ।
तत्रदस्युभिरागत्यसर्वन्धनंहृतम् ।	वहां डांकू लोगों ने आकर सबधन हर लिया ।
द्वापरान्ते युधिष्ठिरादयोबभूवुः ।	द्वापर के अन्त में युधिष्ठिरादि हुएथे।
ममपादेकण्टकःप्रविष्टएनमुद्धर ।	मेरे पैर में कांटा घुस गया इस को निकाल ।
केशान् सम्वय ।	बालों को संभाल ।
भोनापितनखाञ्छिन्धि मुण्डय शिरः श्मश्रूणि च ।	भो नाऊ नखों को काट शिर मूंड़ और मूंछ भी मूंड ।

SGDF
Sri Gargeshwari Digital Foundation

अयं शिल्पी प्रासादमत्युत्तमं रचयति ।	यह राज अटारी बहुत अच्छी बनाता है ।
अयंकोटपालोन्यायकारीवर्त्तते ।	यह कोतवाल न्यायकारी है ।
स तु धर्मात्मानैवास्त्यन्यायकारित्वात् ।	वह कोतवाल तो धर्म्मात्मा नहीं है अन्यायकारी होने से ।
एतेराजमन्त्रिणःकुत्रगच्छन्ति ?	ये राजा के मंत्रीलोग कहां जाते हैं?
राजसभांन्यायकरणाययान्ति ।	राज सभा को न्याय करने केलिये ।
भोस्ताम्बूलानिदेहि ।	ओ पान दे ।
ददामि ।	देता हूं ।
भोस्तैलकार तिलेभ्यस्तैलं निःसार्य्य देहि ।	ओ तेली तिलों से तेल निकाल कर दे ।
दास्यामि ।	दूंगा ।
अरे रजक वस्त्राणि प्रक्षाल्य सद्यो देयानि	अरे धोबी कपड़ों को धोकर शीघ्र देने चाहिये ।
कपाटान् बधान ।	किवाड़ों को बन्द कर ।
इदानीं प्रातःकालो जातः कपाटावुद्घाटय ।	इस समय सुवेरा हुआ किवाड़े खोल ।
सर्वे यद्धाय सज्जा भवन्तु ।	सब सिपाही लोग लड़ाई के लिये तैयार हों ।
अर्थिप्रत्यर्थिनौ राजगृहे युध्येते ।	मुद्दई और मुद्दालेकचहरी में लड़तेहैं ।
किमियं गोधूमान् पिनष्टि?	क्या यह गेहुओं को पीसती है ?
कुतोऽद्य दुर्गे शतघ्न्यश्चलन्ति?	क्यों आज किलेमेंतोपें चलती हैं ?
तेन भुशुण्ड्या सिंहो हतः ।	उसने बन्दूक से बाघ को मारा ।

SGDF
Sri Gangeshwari Digital Foundation

तेनाऽसिना तस्य शिरश्छिन्नम् ।	उसने तलवार से उस का शिर काट डाला ।
अञ्जनं किमर्थमनक्षि ?	अञ्जन किस लिये आंजता है ?
उपानहौ धृत्वा क्व गच्छसि ?	जूते पहिन के कहां जाता है ?
जङ्गलम् ।	जङ्गल को ।
किंस्थाल्यामोदनंपचसिसूपंवा?	क्यावटुवेमेंभात पकाता है वादाल?
कटाहे शाकं पच ।	कड़ाही में तरकारी पका ।
विरुद्धं वदिष्यसि चेत्तर्हि दन्तां स्त्रोटयिष्यामि ।	बिरुद्ध बोलेगा तो तेरे दांत तोड़ डालूं गा ।
तव पितुस्तु सामर्थ्यं ना भूत्. तव तु का कथा ।	तेरे बाप का तो सामर्थ्य न हुआ तेरी तो क्या ही बात कहनी है।
येन प्रजा पाल्यते स कथन्न स्वर्गं गच्छेत् ?	जिस ने प्रजा का पालन किया वह स्वर्गको क्यों म जाय ?
यो राज्यं पीडयेत्स कथन्न नरके पतेत् ?	जो राज्य को नष्ट करे वह क्यों नरक में न पड़े ?
येनेश्वरउपास्यते तस्य विज्ञानं कुतो न वर्द्धेत ?	जो ईश्वर की उपासना करे उसका विज्ञान क्यों न बढ़े ?
यः परोपकारी स सततं कथं न सुखी भवेत् ?	जो परोपकारी है वह सर्वदा सुखी क्यों न होवे ?
अस्यां मञ्जूषायां किमस्ति ?	इससंदूक में क्या है ?
वस्त्रधने ।	कपड़ा और धन ।
इदानीमपि कुम्भ्यां धान्यं वर्त्तते न वा ?	अब कोठी में अन्न है वा नहीं ?

SGDF
Sri Gargeshwari Digital Foundation

स्वल्पमस्ति ।	थोड़ासा है ।
त्वमालसीतिष्ठसिकुतोनोद्योगं करोषि ?	तू आलसी रहता है उद्योग क्यों नहीं करता ?
उभयत्र प्रकाशाय देहल्यां दीपं निधेहि ।	दोनों ओर उजियाला होने के लिये दरवाजे पर दिया धर ।
तेनासिचर्म्मभ्यां शतेन सह युद्धं कृतम् ।	उस ने ढाल और तलवार से सौ पुरुषों के साथ युद्ध किया ।
अतिथीन् सेवसे न वा ?	अतिथियों की सेवा करता है वा नहीं?
प्रेक्षासमाजं मागच्छ ।	कभी मेले तमासे में मत जा ।
द्यूतसमाह्वयौ कदापि नैव सेवनीयौ ।	जो अप्राणी को दाव पर धर के खेलना वह द्यूत और प्राणी को दाव पर धर के खेलना वह समाह्वय कहाता है उन को कभी न सेवना चाहिये ।
यो मद्यपोऽस्ति तस्य बुद्धिः कुतो न ह्रसेत् ।	जो मद्य पीने वाला है उसकीबुद्धि क्यों न न्यून होवे ।
यो व्यभिचरेत्स रुग्णः कथं न जायेत ।	जो व्यभिचार करे वह रोगी क्योंन होवे ।
यो जितेन्द्रियः स सर्वं कर्त्तुं कुतो न शक्नुयात् ।	जो जितेन्द्रिय है वह सब उत्तम काम क्यों न कर सके ।
योगाभ्यासः कृतो येन ज्ञानदीप्तिर्भवेन्नरः ।	जिस ने योग का अभ्यास किया है वह ज्ञान प्रकाश से युक्त होवे ।

SGDF
Sri Gangeshwari Digital Foundation

वस्त्रपूतं जलं पेयं मनःपूतं समाचरेत् ।	वस्त्र से पवित्र किया जल पीना चाहिये और मन से शुद्ध जाना हुआ काम करना चाहिये ।
स भ्रान्तौ कदापि न पतेत् ।	वह भ्रमजाल में कभी नहीं गिरे ।
अयं वाचालोऽस्त्यतो बरबरायते ।	यह बोलने में वाचाल है इसीकारण बड़बड़ाता है ।
भूमितले किमस्ति ?	भूमि के नीचे क्या है ?
मनुष्यादयः ।	मनुष्य आदि ।
यःपद्भ्यांभ्रमति सोऽरोगो जायते ।	जो पग से चलता वह रोगरहित होता है ।
व्यजनेन वायुं कुरु ।	पङ्खा से बतास (वायु) कर ।
किं घर्मादागतो यत् स्वेदोजातोऽस्ति ।	क्या घाम से आया है जो पसीना हो रहा है ।
स्वस्थे शरीरे नित्यं स्नात्वा मितं भोक्तव्यम् ।	अच्छे शरीर होते रोज नहा के थोड़ा सा खाना चाहिये ।
जलवायू शुद्धौ सेवनीयौ ।	पवित्र जल और वायु का सेवन करना चाहिये ।
सर्वर्तुकेशुद्धेगृहेनिवसनीयम् ।	जो सब ऋतुओं में सुख देने वाला हो उसी घर में रहना चाहिये ।
नैवकेनचिन्मलीनानिवस्त्राणि धार्याणि ।	किसी को भी मैले कपड़े पहिनने न चाहिये ।
तव का चिकीर्षास्ति ?	तेरी क्या करने की इच्छा है ?
गृहं गत्वा भोक्तुम् ।	घर जाके खाने को ।

SGDF
Sri Gargeshwari Digital Foundation

त्वं सक्तुं भुङ्क्षे न वा ?	तू सत्तू खाता है वा नहीं ?
घृतदुग्धमिष्टैः सहाऽद्मि ।	घी, दूध और मीठे के साथ खाता हूं।
त्वयाऽम्रफलानिचूषितानिनवा?	तूने आम चूषे वा नहीं ?
उर्वारुकफलान्यत्र मधुराणि जायन्ते ।	खरबूजे के फल यहां मीठे होते हैं।
इक्षुभ्यो गुड़ादिकं निष्पद्यते।	ऊख आदि से गुड़ आदि बनाये जाते हैं।
इदानीमाकण्ठं दुग्धं पीतं मया।	इस समय गले तक मैंने दूध पिया।
तक्रं देहि ।	मठा दे ।
अत्र श्वेता शर्करा वर्तते ।	यहां सुफेद चीनी है।
अयं रुच्या दध्यौदनं भुङ्क्ते ।	यह प्रीति से दही के साथ भात खाता है।
अद्य मोदका भुक्ता न वा ?	आज लड्डू खाये वा नहीं ?
त्वया कदाचित्कृशराऽपि भुक्ता न वा ?	तूने कभीखिचड़ीभी खायी वानहीं?
मयाऽपूपा भक्षिताः ।	मैंने मालपूये खाये हैं।
सशर्करं दुग्धं पेयम् ।	शक्कर के सहित दूध पीनाचाहिये ।
येन धर्मः सेव्यते स एव सुखी जायते ।	जो धर्म्म का सेवन करता है वही सुखी रहता है।

अथ लेख्यलेखक-प्रकरणम् ॥

मनुष्यो लेखाभ्यासं सम्यक् कुर्यात् ।	मनुष्य लिखने का अभ्यास अच्छे प्रकार करे ।

SGDF
Sri Gangadhar Digital Foundation

अयमत्युत्तममक्षरविन्यासं करोति ।	यह अत्युत्तम अक्षर लिखता है ।
लेखनीं सम्पादय ।	कलम बनाओ ।
मसीपात्रमानय ।	दवात ला ।
पुस्तकं लिख ।	पोथी लिख ।
तत्र पत्रं लिखित्वा प्रेषितं न वा ?	वहां चिट्ठी लिख कर भेजी वा नहीं ?
प्रेषितं पञ्च दिनानि व्यतीतानि तस्य प्रत्युत्तरमप्यागतम् ।	भेजा पांच दिन बीते उसका जवाब भी आ गया ।
सुवर्णाक्षराणि लिखितुं जानासि न वा ?	सुनहरी अक्षर लिखने जानता है वा नहीं ?
जानामि तु परन्तु सामग्रीसञ्चयने लेखे च विलम्बो भवति ।	जानता तो हूं परन्तु चीज इकट्ठी करने और लिखने में देर होती है ।
यद्यंगुष्ठतर्जनीभ्यां लेखनीं गृहीत्वा मध्यमोपरि संस्थाप्य लिखेत्तर्हि प्रशस्तोलेखोजायेत ।	जो अंगूठा तर्जनी अंगुली से कलम को पकड़ कर बीचली अंगुली पर रख कर लिखे तो बहुत अच्छा लेख हो ।
अयमतीव शीघ्रं लिखति ।	यह अत्यन्त जलदी लिखता है ।
एतस्य लेखनी मन्दा चलति ।	इस की लेखनी धीरे चलती है ।
यदि त्वमेकाहं सततं लिखेस्तर्हि कियतः श्लोकांल्लिखितुं शक्नुयाः ?	यदि तू एक दिन निरन्तर लिखे तो कितने श्लोक लिख सके ?
पञ्च शतानि ।	पांच सौ ।

SGDF
Sri Gurudev Digital Foundation

यदि शिक्षां गृहीत्वा शनैः शनैर्लिखितुमभ्यस्येत्तर्ह्यक्षराणां सुन्दरंस्वरूपंस्पष्टताचजायेत ।	यदि शिक्षा ग्रहण करके धीरे २ लिखने का अभ्यास करे तो अक्षरों का दिव्य स्वरूप और स्पष्टता होवे।
अस्मिंल्लाक्षारसे कज्जलं सम्मेलितं नवा ?	इस लाख के रस में कज्जल अच्छा मिलाया है वा नहीं ?
मेलितं तु न्यूनं खलु वर्त्तते ।	मिलाया तो है परन्तु थोड़ा है ।
मनुष्यैर्यादृशः पठनाभ्यासः क्रियेत तादृश एव लेखनाभ्यासोऽपि कर्त्तव्यः ।	मनुष्य लोग जैसा पढ़ने का अभ्यास करें वैसा ही लिखने का भी करना चाहिये ।
मया वेदपुस्तकं लेखयितव्यमस्त्येकेन रूप्येण कियतः श्लोकान्दास्यसि?	मुझ को वेद का पुस्तक लिखाना है एक रुपये से कितने श्लोक देगा ?
अत्युत्तमानि ग्रहीष्यसि चेत्तर्हि शतत्रयं मध्यमानि चेच्छतपञ्चकम् ।	जो बहुत अच्छे लोगे तो तीन सौ और मध्यम लोगे तो पांच सौ ।
साधारणानि चेत्सहस्रं श्लोकान्दास्यामि ।	यदि बहुत साधारण वा घटिया लोगे तो हजार श्लोक दूंगा ।
शतत्रयमेवग्रहीष्यामि परन्त्वत्युत्तमं लिखित्वा दास्यसिचेत् ।	तीनही सौ लूंगा परन्तु बहुत अच्छा लेख करेगा तो ।
वरमेवमेव करिष्यामि ।	अच्छा ऐसा ही करूंगा ।

अथ मन्तव्यामन्तव्य–प्रकरणम् ॥

त्वं जगत्स्रष्टारं सच्चिदानन्दस्वरूपं परमेश्वरं मन्यसे नवा?	तू इस संसार के बनाने वाले सच्चित् और आनन्दस्वरूप परमेश्वर मानता है या नहीं ?

SGDF Sri Gaureshwari Digital Foundation

अयं नास्तिकत्वात्स्वभावात्सृष्ट्युत्पत्तिं मत्वेश्वरं नस्वीकरोति ।

यह मनुष्य नास्तिक होने से स्वभाव से सृष्टि की उत्पत्ति को मान कर ईश्वर को नहीं मानता ।

यद्ययं कर्त्तृकार्यरचकरचना विशेषान् संसारे निश्चिनुयात्तर्ह्यवश्यं परमात्मानं मन्येत।

जो यह नास्तिक कर्त्ता क्रिया बनाने द्वारा और बनावट को इस जगत् में निश्चय करे तो अवश्य ईश्वर को माने ।

योऽत्रसृष्टौ रचितरचनां पश्यति स जीवः कार्य्यवत्स्रष्टारं कुतो न मन्येत ?

जो इस सृष्टि में बने हुए पदार्थों की बनावट को प्रत्यक्ष देखता है वह जैसे कारीगरी को देख के कारीगर को निश्चय करते हैं वैसे जगत् के बनाने वाले परमात्मा को क्यों न माने ?

यत्रोत्तमा धार्मिका आस्तिका विद्वांसोऽध्यापका उपदेष्टारश्च स्युस्तत्र कोपि कदाचिन्नास्तिको भवितुं नैवार्हेत् ।

जहां श्रेष्ठधर्मात्मा आस्तिक विद्वान् लोग पढ़ाने वाले और उपदेशक हों वहां कोई भी मनुष्य नास्तिक कभी नहीं हो सकता ।

कैः कर्मभिर्मुक्तिर्भवति तदा क्व वसन्ति तत्र किं भुज्यतेच ?

किन कर्मों से मुक्ति होती है उस समय कहां वास करते और वहां क्या भोगते हैं ?

धर्म्यैः कर्मोपासनाविज्ञानैर्मुक्तिर्जायते तदानीं ब्रह्मणि निवसन्तिपरमानन्दंचसेवन्ते ।

धर्म युक्त कर्म उपासना और विज्ञान से मोक्ष होता है उस समय ब्रह्म में मुक्तजीव रहते और परम आनन्द का सेवन करते हैं ।

SGDF
Sri Gangeshwari Digital Foundation

मोक्षम्प्राप्य तत्र सदा वसन्त्याहोस्वित्कदाचित्ततो निवृत्य पुनर्जन्ममरणे प्राप्नुवन्ति ?

जीव मुक्ति को प्राप्त हो के वहां सदा रहते हैं अथवा कभी वहां से निवृत्त होकर पुनः जन्म और मरण को प्राप्त होते हैं ?

प्राप्तमोक्षा जीवास्तत्र सर्वदा न वसन्ति किन्तु महाकल्पपर्यन्तमर्थाद्ब्राह्ममायुर्यावत्तावत्तत्रोषित्वाऽऽनन्दं भुक्त्वा पुनर्जन्ममरणे प्राप्नुवन्त्येव ।

मुक्ति को प्राप्त हुए जीव वहां सर्वदा नहीं रहते किन्तु जितना ब्राह्मकल्प का परिमाण है उतने समय तक ब्रह्म में वास कर आनन्द भोग के फिर जन्म और मरण को अवश्य प्राप्त होते हैं ।

इति श्रीमद्दयानन्दसरस्वतीस्वामिना
निर्मितः संस्कृतवाक्यप्रबोध-
नामको निबन्धः
समाप्तः ॥

SGDF
Sri Gargeshwari Digital Foundation

SGDF
Sri Gurgeshwari Digital Foundation

सूचीपत्रम्

पृष्ठम्	विषयः
१	ग्रन्थारम्भः
२	नामनिवासस्थान प्रकरणम्
३	गृहाश्रम प्र०
६	भोजन प्र०
८	देशदेशान्तर प्र०
११	सभा प्र०
१२	आर्य्यावर्त्तचक्रवर्त्तिराज्य प्र०
१२	राजप्रजालक्षणराजनीत्यनीति प्र०
१३	शत्रुवशकरण प्र०
१४	वैश्यव्यवहार प्र०
१५	कुसीदग्रहण प्र०
१५	नौकाविमानादि चालन प्र०
१६	क्रयविक्रय प्र०
१७	गमनागमन प्र०
१८	क्षेत्रवपन प्र०
१८	शस्यच्छेदन प्र०
१९	गवादिदोहन परिमाण प्र०
१९	क्रयविक्रयार्घ प्र०
२०	कुसीद प्र०
२०	उत्तमर्णाधमर्ण प्र०
२०	राजप्रजासंबंध प्र०
२१	साक्षि प्र०
२३	सेव्यसेवक प्र०
२४	मिश्रित प्र०
२५	गमनागमन प्र०
२५	रोग प्र०
२७	मिश्रित प्र०
२८	विवाहस्त्रीपुरुषालाप प्र०
२९	स्त्री श्वश्रूश्वशुरादिसेवा प्र०
२९	ननन्दृ भ्रातृ जायावाद प्र०
३१	सायंकालकृत्य प्र०
३२	शरीरावयव प्र०
३७	राजसभा प्र०
३९	ग्राम्यपशु प्र०
४१	ग्रामस्थ पक्षि प्र०
४२	वन्यपशु प्र०
४३	वनस्थपक्षि प्र०
४४	तिर्यग्जन्तु प्र०
४५	जलजन्तु प्र०
४६	वृक्षवनस्पति प्र०
४७	ओषधि प्र०
४८	आत्मीय प्र०
५०	सामन्त प्र०
५०	कारु प्र०
५१	अयस्कार प्र०
५१	सुवर्णकार प्र०
५२	कुलाल प्र०
५२	तन्तुवाय प्र०
५२	सूचीकार प्र०
५२	मिश्रित प्र०
५८	लेख्यलेखक प्र०
६०	मन्तव्यामन्तव्य प्रकरणम्

इति

SGDF
Sri Gangeshwari Digital Foundation